



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 266]
No. 266]

नई दिल्ली, शुक्रवार, नवम्बर 7, 2003/कार्तिक 16, 1925
NEW DELHI, FRIDAY, NOVEMBER 7, 2003/KARTIKA 16, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 नवम्बर, 2003

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित क्लोरोक्वीन फास्फेट के आयातों के संबंध में
पाटनरोधी जांच।

सं. 14/3/2003-डीजीएडी.— सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ
(पाटित वस्तुओं की पहचान. उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति
निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

2. जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:-

i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै0 इपका लैबोरेट्रीज लि0 मुंबई एवं मै0 मंगलम ड्रग्स एंड आर्गेनिक्स लि0, मुम्बई से एक याचिका प्राप्त हुई है जिसमें चीन जनवादी गणराज्य (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए क्लोरोक्वीन फास्फेट के पाटन का आरोप लगाया गया है।

ii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत आवेदन की प्रारंभिक जांच में कतिपय कमियां प्रकट हुई थी जिन्हें बाद में याचिकाकर्ता द्वारा ठीक कर दिया गया था। अतः याचिका को विधिवत प्रलेखित माना गया था।

- iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तु के आयातों खिलाफ जांच शुरू करने का निर्णय लिया। प्राधिकारी ने उक्त नियमों के उप-नियम 5(5) के अनुसार जांच की कार्यवाही शुरू करने से पहले पाटन के आरोप की प्राप्ति के विषय में नई दिल्ली में चीन जनवादी गणराज्य के दूतावास को सूचित किया।
- iv) प्राधिकारी ने 16.7.2003 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था जिसके द्वारा चीन जनवादी गणराज्य मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गयी थी जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची-1 के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत है।
- v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातक (जिसका ब्यौरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और नियम 6(2) के अनुसार उन्हें पत्र की तारीख से 42 दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर दिया।
- vi) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति भारत में संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात आयातकों (जिनका ब्यौरा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध करवाया गया था) को भेजी और उन्हें नियम 6(2) के अनुसार पत्र जारी होने की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी गयी थी।
- vii) केन्द्री उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) से भी अनुरोध किया गया कि वह जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान भारत में किए गए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरे प्रस्तुत करें।
- viii) प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की प्रति संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातक तथा दूतावास को प्रदान की। जहां अनुरोध किया गया वहां अन्य हितबद्ध पक्षकारों को अगोपनीय याचिका की एक प्रति भी प्रदान की गयी थी।
- ix) चीन जनवादी गणराज्य के नई दिल्ली स्थित दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने की सूचना दी गई जिससे यह अनुरोध किया गया कि वे अपने देश/क्षेत्र के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का निर्धारित समय के अंदर उत्तर देने की सलाह दें। याचिका के अगोपनीय अंश की प्रति, जांच शुरूआत करने संबंधी अधिसूचना की प्रति और निर्यातक प्रश्नावली भी भेजी गयी थी।

x) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी:-

1. मै0 संघाई झौंसी(ग्रुप) कारपोरेशन, चीन जनवादी गणराज्य ।
2. मै0 जिबो वांचेंग ग्रुप कं0 लि0, चीन जनवादी गणराज्य ।
3. मै0 झियांग हूँ इम्पोर्टर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स कं0 लि0 चीन जनवादी गणराज्य ।
4. मै0 सिनोचेम जियांग्सु इम्पोर्टर्स एण्ड एक्सपोर्टर्स कं0 लि0 चीन जनवादी गणराज्य ।
5. मै0 सिनकैम इंटरनेशनल कं0 लि0, चीन जनवादी गणराज्य ।

xi) नियम 6(4) के अनुसार, एक प्रश्नावली संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को भेजी गई थी :-

1. मै0 नेम आर्गेनिक्स लि0, मुंबई ।
2. मै0 श्रवणी फार्मास्यूटिकल्स लि0, मुंबई ।
3. मै0 हिसेल फार्मास्यूटिकल्स लि0, हैदराबाद ।
4. मै0 एडवेंट फार्मा प्रा0 लि0, मुंबई ।
5. मै0 बेयर (इंडिया) लि0, मुंबई ।
6. मै0 बॉम्बे ड्रग्स एण्ड फार्मा लि0, मुंबई ।
7. मै0 पराग फार्मास्यूटिकल्स (इ0) प्रा0 लि0, मुंबई ।
8. मै0 पुष्पम फार्मास्यूटिकल्स, मुंबई ।
9. मै0 संदीप फार्मा लि0, बडोदरा ।
10. मै0 सुनीता लेबोरेटरीज लि0, इंदौर ।
11. मै0 टाटा फार्मा लि0, मुंबई ।
12. मै0 वेलियन इंडस्ट्रीज लि0, मुंबई ।
13. मै0 बेयर (इंडिया) लि0, ठाणे ।
14. मै0 ई.मर्क(इंडिया) लि0, मुंबई ।
15. मै0 इण्डोको रिमेडीज लि0, मुंबई ।
16. मै0 निकोलस पिरामल इंडिया लि0, मुंबई ।
17. मै0 प्लेथिको फार्मास्यूटिकल्स लि0, मुंबई ।
18. मै0 मनीष फार्मास्यूटिकल्स लि0, गोवन्डी ।
19. मै0 मेडो फार्मा, चेन्नई ।
20. मै0 एस0 कांत हेल्थकेयर, मुंबई ।

xii) निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर/सूचना प्रस्तुत की थी ।

1. मै0 सिनोचेम जियांग्सु इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कार्पोरेशन, चीन जनवादी गणराज्य ।
2. मै0 चोंगकिंग कांग्ले फार्मास्यूटिकल्स कं0 लि0, चीन जनवादी गणराज्य ।

xiii) निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ता/एसोसिएशनों द्वारा प्रश्नावली/अधिसूचा का उत्तर/सूचना दी गयी थी:-

1. शून्य

xiv) याचिकाकर्ता से क्षति के बारे में सूचना मांगी गयी थी जो उन्होंने प्रस्तुत भी कर दी थी । निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों के क्षति संबंधी मापदण्ड प्रस्तुत किए गए थे :-

1. मैसर्स इपका लेबोरेट्रीज लि0, मुंबई ।
2. मैसर्स मंगलम ड्रग्स एंड आर्गेनिक्स लि0, मुंबई ।

xv) प्राधिकारी ने नियम 6(7) के अनुसार विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रखा ।

xvi) सामान्य तौर पर स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत तथा निर्माण एवं बिक्री की लागत निकालने हेतु लागत जांच भी की गयी थी । निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों की आंकड़ा लागत प्रदान की गयी और उनका विश्लेषण किया गया:-

1. मैसर्स इपका लेबोरेट्रीज लि0, मुंबई ।
2. मैसर्स मंगलम ड्रग्स एंड आर्गेनिक्स लि0, मुंबई ।

xvii) इस अधिसूचना में **** से किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गयी सूचना प्रदर्शित होती है जिसे नियमों के तहत प्राधिकारी ने ऐसा ही माना है ।

xviii) जांच 1 अप्रैल, 2002 से 31 मार्च, 2003 अर्थात् जांच अवधि के लिए की गयी थी ।

ख. निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

याचिकाकर्ता के विचार

विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद क्लोरोक्वीन फास्फेट है । क्लोरोक्वीन फास्फेट एक कार्बनिक रसायन है और इसका उपयोग मुख्य रूप से मलेरिया हेतु औषधि के रूप में

किया जाता है। यह एक सफेद अथवा लगभग सफेद क्रिस्टलीय पाउडर, आर्द्रताग्राही, जल में मुक्त रूप से घुलनशील, एल्कोहल, ईथर और मेथानॉल में कम घुलनशील है। क्लोरोक्वीन फास्फेट सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत सीमाशुल्क उप-शीर्ष सं० 293921 के तहत वर्गीकृत है। यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 में वर्गीकृत है।

घरेलू उद्योग

3. वर्तमान याचिका इपका लेबोरेटरीज लि० और मंगलम ड्रग्स एण्ड आर्गेनिक्स लि० द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत की गयी है। वर्ष 1996-97 के लिए इंडियन फार्मास्यूटिकल्स इंडस्ट्री सोर्सिंग की निर्देशिका के अनुसार, इस उत्पाद के ग्यारह अन्य उत्पादक थे।

4. याचिकाकर्ता के अनुसार इन उत्पादों के अतिरिक्त आई डी पी एल, हैदराबाद (भारत सरकार का एक उपक्रम) भी संबद्ध माल की अल्प मात्रा का विनिर्माता था। इसके अलावा, बेयर (आई) लि०, हिसेल फार्मा लि०, इपका लेबोरेटरीज लि०, बंगलम आर्गेनिक्स, शेरवानी फार्मास्यूटिकल्स लि०, टाटा फार्मा लि० और आईडीपीएल को छोड़कर अन्य उत्पादक वस्तुतः संबद्ध माल का उत्पादन नहीं कर रहे थे। बेयर इंडिया लि० केवलस्वयं की खपत के लिए संबद्ध माल का उत्पादन कर रहा था। मैसर्स फार्मास्यूटिकल्स लि०, मैसर्स हिसेल फार्मास्यूटिकल्स लि०, मैसर्स आईडीपीएल और मैसर्स टाटा फार्मा लि० ने अपना उत्पादन बंद कर दिया है। इसके अलावा, मैसर्स नेम आर्गेनिक्स लि० संबद्ध माल की अति अल्प मात्रा का उत्पादन कर रहा है।

5. इपका लेबोरेटरीज लि० और मंगलम ड्रग्स और आर्गेनिक्स लि० बहुउत्पाद कंपनियां हैं और ये अनेक उत्पादों के उत्पादन में शामिल हैं। याचिकाकर्ताओं ने विगत तीन वर्षों में संबद्ध माल का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता क्लोरोक्वीन फास्फेट का निर्यात अनेक देशों को कर रहे हैं।

समान वस्तु

6. याचिकाकर्ताओं और चीन में उत्पादकों द्वारा अपनायी गयी प्रौद्योगिकी में कोई ज्ञात अंतर नहीं है, हालांकि प्रत्येक विनिर्माता उपलब्ध सुविधाओं एवं आवश्यकताओं के अनुसार अपनी उत्पादन प्रक्रिया में सुधार करता है।

पाटन

7. संबद्ध देश में कथित पाटित उत्पाद के सामान्य मूल्य के बारे में निम्नलिखित सूचना प्रदान की जाए:-

8. समान वस्तु के लिए व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में तुलनीय कीमत जब वह वस्तु निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो ।

9. निर्यातकों की कीमत संबंधी रुचियां, संबद्ध देश के स्थानीय बाजार में तैयार की जाने वाले वाणिज्यिक बीजक, प्रतिष्ठित व्यापार पत्रिकाएं इत्यादि निर्यातक देश में सामान्य मूल्य स्थापित करने के लिए उचित साक्ष्य बन सकते हैं । कृपया कीमत निर्धारण का आधार स्पष्ट कीजिए जैसे कारखाना द्वार/सुपुर्द अथवा कुल/निवल कीमतें, इत्यादि । कृपया सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचारित बिक्री कीमतों के साथ व्यापार/वाणिज्यिक छूटों, करों, पण्य भिन्नताओं एवं कराधान, इत्यादि के कारण बिक्री कीमतों में किए जाने वाले अपेक्षित समायोजनों के बारे में सूचना प्रदान कीजिए ।

10. यदि निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तुओं की कोई बिक्रियां नहीं होती है अथवा विशेष बाजार स्थिति के कारण अथवा निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की अल्प मात्रा होती है तो, इस प्रकार की बिक्रियों से उचित तुलना नहीं की जा सकती है, कृपया प्रदान करें :-

- (i) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधात्मक कीमत जब वह वस्तु निर्यातक देश अथवा क्षेत्र से किसी उपयुक्त तीसरे देश को निर्यात की गयी हो, अथवा
- (ii) प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में संबद्ध माल की उत्पादन लागत ।

11. सामान्य मूल्य उस समान वस्तु के लिए निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में माल की कीमत है जो व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में खपत के निमित्त हो । निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान नियमावली के अंतर्गत अनुबंध I के पैरा 7 की ओर आकर्षित किया जाता है जो 15 जुलाई, 1999 की अधिसूचा सं0 44/99-कस (एनटी) द्वारा सम्मिलित किया गया है । अनुबंध I के पैरा 7 में यह कहा गया है:-

12. मैसर्स चोंग क्विंग केंग ली फार्मास्यूटिकल्स क0 लि0, चीन और सिनोकैम जियांगसू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कारपोरेशन द्वारा किए गए अनुरोध एवं दावों के बारे में याचिकाकर्ता यह दोहराते हैं कि व्यापारिक कंपनी राज्य के स्वामित्व वाली कम्पनी है । इस बारे में याचिकाकर्ता ने इसी असंख्य निर्णयों का हवाला दिया है । यह निवेदन है कि एक समान परिस्थितियों में इसी ने चीनी कम्पनी को एमईटी प्रदान करने से इंकार कर दिया है । इसी ने कम्पनी के राज्य के स्वामित्व में होने की स्थिति की वजह से एमईटी देने से मना किया है । वर्तमान मामले में एक स्पष्ट स्वीकृति यह है कि व्यापारिक कम्पनी राज्य स्वामित्व वाली कम्पनी है । ऐसा मामला होने के कारण याचिकाकर्ताओं का विश्वास है कि अन्य मापदण्डों की जांच संगत भी नहीं हो सकती है (यद्यपि ये मापदण्ड भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और वर्तमान कंपनी कुछ अन्य मापदण्डों के संबंध में भी शायद मेट परीक्षण पास नहीं करेगी) ।

13. वास्तव में ई सी द्वारा अपनाए गए सिद्धांतों के अनुसार कंपनी को अलग-अलग व्यवहार भी प्रदान नहीं किया जा सकता, मेट को तो एक तरफ छोड़ दें। जैसाकि आपको ज्ञात है, एक निर्यातक को एक अलग व्यवहार (अलग पाटन मार्जिन) कवल तभी प्रदान किया जा सकता है बशर्ते कि निर्यातक यह प्रदर्शित कर सके कि वह कीमतें निर्धारित करने को मुक्त है। यदि निर्यातक निर्यात कीमत निर्धारित करने को मुक्त नहीं है तो ऐसे किसी निर्यातक को अलग पाटन मार्जिन प्रदान करने से सिफारिश किए गए पाटनरोधी शुल्क के साथ गम्भीर अन्याय हो सकता है। वर्तमान मामले में, जैसाकि ई सी के निर्णय से स्पष्ट है, निर्यातक को अलग व्यवहार भी प्रदान नहीं किया जा सकता है।

14. निर्यातकों ने बाजार अर्थ-व्यवस्था व्यवहार के लिए भी दावा नहीं किया है। यह प्रतीत होता है कि निर्यातक भली-भांति यह जानते हैं कि वे बाजार अर्थव्यवस्था परिस्थितियों के अन्तर्गत प्रचालन नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार यह अनुरोध किया जाता है कि सामान्य मूल्य का निर्धारण अनुबंध-I के पैरा 7 के आधार पर किया जाना चाहिए। आगे यह स्पष्ट है कि विनिर्माण कंपनी केवलराज्य द्वारा शासित व्यापार कंपनी के जरिए सामान की बिक्री कर रही है और कंपनी का कीमतों, मात्राओं अथवा इसकी निर्यात बिक्री के गंतव्य के संबंध में कोई नियंत्रण नहीं है। ऐसा मामला होने के कारण याचिकाकर्ता दावा करता है कि कंपनी अलग व्यवहार (अलग पाटन मार्जिन) प्राप्त करने के लिए पात्र नहीं है। तदनुसार, याचिकाकर्ता अनुरोध करते हैं कि विनिर्माता कंपनी चोंग किंग केंग ले फार्मास्यूटिकल लि० के लिए अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया जा सकता है क्योंकि व्यापारी कंपनी मै० सिनोकैम जिआंग्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट, कार्पोरेशन ने माना है कि वे राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी हैं।

15. दोनों कंपनियों में से मै० सिनोकैम जिआंग्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कार्पोरेशन 100% निर्यात-आयात कंपनी है और इसलिए कंपनी की कोई घरेलू बिक्री नहीं है। धारा 9 क 1(ग) के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी का ध्यान आकर्षित करने का अनुरोध है, जिसमें निम्नानुसार उल्लेख है:-

(क) किसी वस्तु के संबंध में 'सामान्य मूल्य' का अर्थ:-

- i) उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निर्धारित सामान्य व्यापार के दौरान ~~सामान्य~~ मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, अथवा
- ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अर्थात् निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

16. नियमों में प्रावधान है कि यदि निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री न हो तब निर्दिष्ट प्राधिकारी सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए अन्य विकल्प का सहारा ले सकता है। नियमों में ऐसी कोई सीमा नहीं है कि घरेलू बाजार में बिक्री उसी निर्यातक की होनी चाहिए। बिक्रियाँ अन्य निर्यातक की भी हो सकती हैं। कैटेलिस्ट के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इस विचार को अपनाया था। ऐसी स्थिति होने के कारण, निर्दिष्ट प्राधिकारी सिनोकैम जियांग्सु इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट कारपोरेशन के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण अन्य निर्यातक अर्थात् चौंग किंग कैंग ली फार्मास्यूटीकल कं० लि०, चीन द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर करेंगे।

17. 'गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर या ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर किया जाएगा, या जहाँ यह संभव नहीं है, वहाँ सामान्य मूल्य का निर्धारण ऐसे अन्य उचित आधार पर किया जाएगा जिसमें उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए आवश्यकतानुसार विधिवत् समायोजित समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से संदत्र या संदेय कीमत शामिल होती।'*

18. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि इन नियमों में स्पष्ट रूप से गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विभिन्न पद्धतियों का प्रावधान है।

19. गैर-बाजार अर्थव्यवस्थाओं के मामले में सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में 31 मई, 2001 में नियमों में आगे संशोधन किए गए थे और पैरा 7 में संशोधन किए गए हैं और इस संबंध में नियमों के अनुबंध-1 में पैरा 8 शामिल किया गया है। उपर्युक्त संशोधन स पहले संशोधन का केवल विस्तार किया गया है और कुछ देशों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्थाओं के रूप में नामित किया गया है। भारत सरकार ने 4 जनवरी, 2002 को आगे नियमों के पैरा 8 में संशोधित किया, जिनमें निम्नानुसार उल्लेख है:-

* अनुबंध -1 का पैरा 8- 04.01.2002 को संशोधित*

(1) 'गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश' शब्द का अभिप्राय किसी ऐसे देश से है विनिर्दिष्ट प्राधिकारी लागत अथवा, कीमत निर्धारण ढांचे के बाजार सिद्धांतों पर प्रचालन न करने वाला निर्धारित करें ताकि ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्री से पण्य का उचित मूल्य उप पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंड के अनुसार मालूम न हो।

(2) यह अवधारणा होगी कि कोई देश जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू टी ओ सदस्य देश के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि से पहले के तीन वर्ष के दौरान किसी पाटनरोधी जांच की प्रक्रिया के लिए एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित किया गया हो अथवा माना गया हो, एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है।

(3) बशर्ते तथापि गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश अथवा ऐसे देश की संबंधित फर्म विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना अथवा साक्ष्य प्रस्तुत करके ऐसी अवधारणा का खंडन कर

सकते हैं जो यह सिद्ध करें कि ऐसा देश उप पैराग्राफ 3 में विनिर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

(4) निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रत्येक मामले में निम्नलिखित मापदण्डों पर विचार करेंगे कि क्या:

(क) ऐसे देशों में संबंधित फर्मों कीमतों, कच्ची सामग्री सहित लागतों तथा निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां तथा निवेश के बारे में बाजार संकेतकों अर्थात् पूर्ति एवं मांग के अनुसार तथा इस संबंध में राज्य के किसी महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के बिना निर्णय लेती हैं और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतें सही ढंग से बाजार मूल्यों को प्रदर्शित करती हैं।

(ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से उत्पन्न विकृतियों विशेष रूप से परिसंपत्तियों के मूल्य ह्रास जन्य बट्टे खातों, वस्तु विनिमय व्यापार और उधार की प्रतिपूर्ति के जरिये भुगतान के संबंध में, के प्रभाव में हैं:

(ग) ऐसी फर्मों दिवालियापन तथा सम्पत्ति कानूनों के अधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन के लिए वैधानिक निश्चितता तथा स्थायित्व की गारंटी देते हैं।

(घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किए जाते हैं :

20. तथापि, बशर्ते कि जहां इस पैराग्राफ में विनिर्दिष्ट मापदण्ड, कि पाटनरोधी जांच से संबद्ध ऐसी एक या अधिक फर्मों के लिए बाजार संबंधी स्थितियाँ विद्यमान हैं, के आधार पर पर्याप्त लिखित साक्ष्यों द्वारा दर्शाया जाए, निर्दिष्ट प्राधिकारी इस पैराग्राफ में निर्धारित सिद्धांतों के बजाय पैराग्राफ 1 से 6 में निर्धारित सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।

21. मौजूदा मामले में चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था है। यूरोपीय आयोग और संयुक्त राज्य ने अनेक मामलों में पिछले तीन वर्षों में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना है। यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। भारत में भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में माना है। यूरोपीय संघ और संयुक्त राज्य विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं। भारत में भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है।

22. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 31 मई, 2002 के संशोधन के पश्चात् चीन के विरुद्ध आरम्भ की गई सभी जांचों में व्यावहारिक रूप से चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है। 4 जनवरी, 02 के संशोधन के पश्चात् भी निर्दिष्ट प्राधिकारी ने चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देश के रूप में माना है।

23. अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्य देशों द्वारा चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानने के संबंध में यूरोपीय आयोग ने चीन से फैंरो मोलिब्डिनम के मामले में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था माना है ।

24. अमरीका बाल बियरिंग के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांचों के मामले में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मान रहे हैं ।

25. चूंकि चीन एक ' गैर-बाजार अर्थव्यवस्था ' देश है इसलिए चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण गैर-बाजार अर्थव्यवस्थाओं से संबंधित नियमों के अनुसार किया जाता है ।

26. इन नियमों के अनुसार चीन में सामान्य मूल्य निम्नलिखित किसी आधार द्वारा निर्धारित किया जा सकता है:-

1. बाजार अर्थव्यवस्था तीसरे देश में कीमत,
2. बाजार अर्थव्यवस्था तीसरे देश में परिकलित मूल्य,
3. भारत सहित अन्य देशों के लिए किसी ऐसे तीसरे देश से कीमत ।
4. भारत में वास्तविक रूप में संदत्र कीमत एक उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समायोजित की गई ।
5. भारत में वास्तव में संदेय कीमत एक उचित लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए समायोजित की गई ।

27. इस प्रकार चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण ऊपर उल्लिखित किसी भी आधार पर किया जा सकता है ।

28. याचिकाकर्ता ने सामान्य मूल्य का निर्धारण संबद्ध वस्तु के उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया है । उत्पादन की परिकलित लागत के लिए अपनाई गई प्रक्रिया का नीचे वर्णन किया गया है:-

1. कच्चे माल की लागतें:- याचिकाकर्ता ने कच्चे माल के कारण लागत का निर्धारण याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पन्न लागत के आधार पर किया है जिसे भारत में लागू सीमाशुल्क में संभव अन्तर के लिए समायोजित किया गया है ।
2. परिवर्तन एवं एस एंड डी लागत:- याचिकाकर्ता ने याचिकाकर्ता कंपनी के आधार पर परिवर्तन लागतों की विभिन्न मदों का आकलन किया है । कारखानागत व्यय से आगे किसी बिक्री व्यय पर विचार नहीं किया गया है । याचिकाकर्ता कंपनी के संयंत्र के उपयोग को ध्यान में रखते हुए उक्त संयंत्र के उपयोग में अन्तर हेतु इन्हें समुचित ढंग से समायोजित किया गया है ।

3. ब्याज:- ब्याज लागत पर उत्पादन लागत के 5% की दर से विचार किया गया है ।

4. लाभ:- लाभ पर उत्पादन लागत के 8% की दर से विचार किया गया है।

29. निर्यात कीमत का निर्धारण उक्त अवधि की औसत निर्यात कीमत के आधार पर किया गया है। पाटनरोधी गैर करार और भारतीय नियमों के अनुसार सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना व्यापार के सामान्य स्तर अधिमानतः कारखानास्तर पर की जानी चाहिए।

क्षति:-

30. क्लोरोक्वीन फास्फेट का उपयोग मलेरिया के उपचार हेतु पहली पसंदीदा औषधि के रूप में किया जाता है। विश्व में चीन और भारत क्लोरोक्वीन फास्फेट के दो प्रमुख उत्पादक हैं। चीन में मलेरिया नहीं है और इसलिए चीन के निर्यातक/उत्पादक संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में पाटन कर रहे हैं।

31. क्लोरोक्वीन नुस्खे के प्रमुख ग्राहकों में से एक ग्राहक भारत सरकार का राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम है। यह विभाग प्रतिस्पर्धी बोलियों के जरिए क्लोरोक्वीन की गोलियों की खरीद करता है। इसके अलावा, उक्त विभाग इस सामग्री की खरीद सामान्यतः थोक रूप में करता है जिसकी तुरंत खपत नहीं हो पाती है। वस्तुतः विभाग के पास किसी भी समय उक्त सामग्री का पर्याप्त स्टॉक होता है।

32. उपरोक्त के परिप्रेक्ष्य में, वर्ष वार आधार पर मांग के संबंध में संबद्ध वस्तु की आवश्यकता में अनियमित पैटर्न पाया जाता है। तथापि, यह दोहराया गया है कि ऐसी वसूली स्व-उपभोग के लिए नहीं है और वे स्टॉक में जुड़ जाती हैं। तथापि, सरकारी वसूली के माध्यम से प्रस्तुत असामान्यता के हटाने के बाद यदि उत्पाद के उपभोग पर विचार किया जाता है तो यह देखा जाएगा कि यद्यपि उत्पाद कीमांग में गिरावट नहीं आई है, तथापि वर्तमान अवधि में आयात काफी अधिक हैं (पिछले दो वर्षों में भारत सरकार के राष्ट्रीय मलेरिया-रोधी कार्यक्रम से कम वसूली हुई जिसके परिणाम स्वरूप कम आयात और घरेलू बिक्री हुई है)।

33. याचिकाकर्ता ने क्षति की अवधि के लिए आयात आंकड़ों की विस्तृत जांच की है। 2000-01 के लिए आंकड़ों की समीक्षा करते समय यह पाया गया है कि 2000-01 में 182.23 रु० प्रति कि० ग्रा० की दर से 98.3 मी. टन का आयात दर्शाया गया है। यह पया गया था कि जहाँ औसत आयात कीमत 500 रु० प्रति कि० ग्रा० से अधिक थी, 98.3 म० टन के आयातों को 182.23 रु० प्रति कि० ग्रा० की दर से बताया गया है। इससे स्पष्टतया प्रदर्शित होता है कि डी जी सी आई एंड एस द्वारा रिपोर्ट किए गए आंकड़ों में स्पष्ट त्रुटि है।

34. ऐसा प्रतीत होता है कि आयात मात्राओं में गिरावट आई है (और इसलिए, घरेलू उद्योग को आयातों से क्षति नहीं हो सकती थी)। अन्य देशों से आयात मात्राओं में वृद्धि

प्रदर्शित होती है। तथापि, जैसाकि पूर्व में कहा गया था, यह स्विट्जरलैंड से चीनी आयातों का प्रत्यक्षतः पोतपरिवहन ही है। अतः स्विट्जरलैंड से आयातों को भी चीनी आयातों में शामिल किया जाना चाहिए। यदि ये आयात शामिल कर लिए जाते हैं तो यह देखा जा सकेगा कि आयात मात्रा में वृद्धि प्रदर्शित हो रही है। यह भी दृष्टव्य होगा कि आयात मात्राओं में अत्यधिक गिरावट आई है। पहुँच मूल्य अत्यंत कम होने के कारण, घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें काफी कम करनी पड़ी हैं, जो याचिकाकर्ता की उत्पादन लागत से काफी नीचे है, जिसके परिणामस्वरूप याचिकाकर्ता को बहुत आर्थिक घाटा हुआ है।

35. घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमतों में कटौती किए जाने के बावजूद बिक्री मात्रा में गिरावट आई है।

36. सीमाशुल्क के प्रचलित स्तर को प्रभारित करने के बाद आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है। इस प्रकार आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कटौती हो रही है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग कीमतों को कम करने के लिए बाध्य हुआ है।

(क) घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कमी करने के बावजूद आयातों के परिणामस्वरूप कीमत कटौती हो रही है।

(ख) आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से काफी कम है जिसके कारण कीमत में कमी हो रही है।

(ग) आयातों की बिक्री कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम है। इसलिए आयातों से बाजार में कम कीमतों पर बिक्री हो रही है।

(घ) घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत डी पी सी ओ द्वारा अधिसूचित कीमतों से काफी कम है। याचिकाकर्ताओं के पास भारतीय बाजार का प्रमुख हिस्सा है। इसके साथ ही यह उत्पाद डी पी सी ओ के अंतर्गत कवर किया जाता है। याचिकाकर्ताओं की निर्यात कीमत भारत में सामग्री की आयात कीमत से काफी अधिक है। इन परिस्थितियों में, इष्टतम से कम घरेलू कीमतें होने का एकमात्र कारण आयातित सामग्री की काफी कम कीमतों की उपलब्धता है।

37. घरेलू उद्योग की क्षति को दर्शाने वाला एक अति महत्वपूर्ण मापदण्ड घरेलू उद्योग का विकृत वित्तीय निष्पादन है। उत्पादन की यूनिट लागत तथा यूनिट बिक्री कीमत की तुलना से यह पता चलेगा कि घरेलू उद्योग 1999-2000 में मुनाफा कम रहा था। तथापि चीन के निर्यातकों द्वारा पाटन के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में विकृति आ गई है।

38. उत्पादन में कमी के बावजूद घरेलू उद्योग के भण्डार स्तर में वृद्धि हुई है, घरेलू उद्योग का औसत स्टॉक पर्याप्ततः बढ़ गया है।

39. चीन से पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है बल्कि काफी अधिक भी है। घरेलू उद्योग पर पाटन का भारी प्रभाव पड़ा है।
40. संबद्ध वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग के नकदी प्रवाह में अत्यधिक वित्तीय घाटे के मद्देनजर भारी विकृति आई है। संबद्ध वस्तु से नकदी प्रवाह में प्रतिकूल गिरावट आई है।
41. जहां संबद्ध वस्तु की मांग लगभग समान रही वहीं घरेलू उद्योग की बिक्रियों में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की है।
42. यदि पाटन का वर्तमान रुझान जारी रहता है तो घरेलू उद्योग को नई पूंजी जुटाने में कठिनाइयां आने की संभावना है।
43. घरेलू उद्योग की उत्पादकता में 2000-01 में वृद्धि हुई किंतु उसके बाद उत्पादन रुझान के अनुसार गिरावट आई।
44. निवेश पर आय में अत्यधिक गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को लाभ की स्थिति से घाटे की स्थिति में आने के लिए बाध्य किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पूर्व में निवेश पर प्राप्त सकारात्मक आय की स्थिति की तुलना में प्रस्तावित जांच अवधि में निवेश पर आय ऋणात्मक रही है।
45. इस प्रकार यह देखा जाएगा कि अनेक मापदण्डों से सामूहिक एवं संचयी रूप से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

वास्तविक क्षति का खतरा

46. घरेलू उद्योग को पहले ही हो चुकी वास्तविक क्षति के अलावा चीन से होने वाले आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा बना हुआ है।
- वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों के आधार पर किया जाएगा और न कि केवल आरोप, अनुमान अथवा परोक्ष संभावना के आधार पर ऐसी परिस्थितियों, जिनके तहत ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें पाटन से क्षति होगी, में हुआ परिवर्तन स्पष्ट तौर पर पूर्वापेक्षित एवं आसन्नवर्ती होना चाहिए। वास्तविक क्षति के किसी खतरे की मौजूदगी के बारे में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे तथ्यों और निम्नलिखित पर विचार करेगा।

(क) भारत में पाटित आयातों की अत्यधिक वृद्धि दर जिससे पर्याप्ततः वर्धित आयात की संभावना का पता चलता है:

(ख) निर्यातक की क्षमता में मुक्त रूप से पर्याप्त निपटान योग्य अथवा आसन्नवर्ती, अत्यधिक वृद्धि जिससे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की

उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में अत्यधिक वर्धित पाटित निर्यातों की संभावना का पता चलता है:

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर पर्याप्त ह्रासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा और जिनसे आगे और आयातों की मांग में वृद्धि होने की संभावना है: और

(घ) जांच की जा रही वस्तु की सूची, इस मामले में,

1. आयात की मात्रा में वृद्धि हुई है यह वृद्धि और अधिक रही होती यदि घरेलू उद्योग ने कीमतों में कमी न करके अथवा उचित कीमतें (वित्तीय घाटे पर) लागू न करके उसमें कमी करने के प्रयास न किए होते। अपनी बिक्रियों को बढ़ाने के लिए चीन के उत्पादकों के प्रयासों को बिक्री कीमतों में आगे और कमी के रूप में देखा जा सकता है जैसाकि जनवरी, 2003 के लिए सूचित कीमत से देखा जा सकेगा।

2. कीमत में भारी कटौती की गई है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमतों में तेजी से कमी करने के बावजूद आयात घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम कीमत पर उपलब्ध हैं जिससे कीमत में लगातार भारी कटौती हो रही है।

3. चीन के उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं उनकी घरेलू मांग से काफी अधिक हैं। वस्तुतः यह समझा जाता है कि चीन में स्थानिक स्थितियों के कारण इस उत्पाद के लिए मांग लगभग नगण्य समझी जाती है। उत्पादन सुविधाएं विदेशी बाजारों को ध्यान में रखते हुए स्थापित की गई प्रतीत होती हैं।

4. घरेलू उद्योग की वस्तु सूची में वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त के मद्देनजर यह कहा जा सकता है कि चीन से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को आगे और वास्तविक क्षति होने का खतरा बना हुआ है।

निर्यातकों के विचार

मै0 सिनोकेम जियांग्सू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कारपोरेशन

47. मै0 सनोकेम जियांग्सू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कारपोरेशन, सिनो केमिक जनरल कारपोरेशन द्वारा निवेशित राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी है।

48. यह एक व्यापारिक कंपनी है, न कि संबद्ध उत्पाद की एक उत्पादक कंपनी। संबद्ध उत्पाद का उत्पादक चोंग क्विंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कंपनी लि0 है, जिसने निर्यातक प्रश्नावली से संबंधित सूचना प्रस्तुत कर दी है।

49. सरकार संबद्ध उत्पाद की निर्यात बिक्रियों के संबंध में कोई प्रोत्साहन या अधिमानी व्यवहार नहीं प्रदान करती है।

50. वे चीन, भारत और अन्य स्थानों में संबद्ध उत्पाद के उत्पादन में शामिल कंपनियों से संबंधित नहीं है।

मै0 चोंग क्विंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कं0 लि0, चीन जनवादी गणराज्य

51. मै0 चोंग क्विंग कांग ले फार्मास्यूटिकल कं0 लि0 एक संयुक्त उद्यम कंपनी है जो अमरीकी कंपनी, हांगकांग कंपनी और निजी शेयरधारकों समेत बहुत सी चीनी कंपनियों ने संयुक्त रूप से निवेशित है।

52. संबद्ध उत्पाद के उत्पादन के संबंध में निविष्टियों, बिक्रियों के संबंध में कोई प्रोत्साहन या कर अधिमानी व्यवहार प्रदान नहीं किया जाता और न ही कोई सब्सिडी या बिजली उपयोग संबंधी सुविधाएं दी जाती हैं। उन्होंने संबद्ध उत्पाद का उत्पादन करने के प्रयोजनार्थ सामग्रियों का आयात नहीं किया है।

53. चूंकि संबद्ध उत्पाद की बिक्री इससे असंबद्ध व्यापारिक कंपनी के जरिए की जाती है, इसलिए इस प्रक्रिया में शामिल व्यापारिक कंपनियों ने जानकारी उपलब्ध कराई है। संबद्ध उत्पाद की घरेलू बिक्रियां "इंजेक्शन हेतु प्रयोग" की जाती हैं और निर्यात बिक्रियां टेबलेट संबंधी प्रयोग के लिए। उत्पादन प्रक्रिया तथा लागत में अंतर नहीं था लेकिन "इंजेक्शन" संबंधी उपयोग के लिए प्रयुक्त किस्म "टेबलेट" उपयोग वाली किस्म से अधिक कीमत की थी।

54. मै0 झेझियांग एन एच यू इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कं0 लि0, ने दावा किया कि हमने न तो एक उत्पादक के रूप में संबद्ध वस्तु का उत्पादन किया था और न ही एक विक्रेता के रूप में किसी बाजार श्रृंखला के जरिए इसे बेचा था।

ग. प्राधिकारी द्वारा जांच

55. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए पूर्वोक्त अनुरोधों पर नियमों के अनुसार संगतता तथा उनके इस मामले के साथ संबंध के अनुसार इन जांच परिणामों में उचित स्थानों पर जांच, विचार एवं ध्यान दिया गया है।

विचाराधीन उत्पाद

56. वर्तमान याचिका में विचाराधीन उत्पाद क्लोरोक्विन फास्फेट है। क्लोरोक्विन फास्फेट एक कार्बनिक रसायन है और इसे प्राथमिक रूप से मलेरिया की आषधि में प्रयोग किया जाता है। यह सफेद या लगभग सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर, हाइग्रोस्कोपिक, जल में मुक्त रूप से घुलनशील, ईथर या मेथेनोल है। इसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।

57. इसमें 98.5% से अधिक और 101.0% से कम एन 4 (7-क्लोरोक्विनोलीन 4-आइल)-एन 1, एन 1-डाइथयपेन्टेन-1,4-डायमाइनबिस (डिहाइड्रोजन फॉस्फेट), होता है जिसे एनहाइड्रस पदार्थ के संदर्भ में परिकलित किया जाता है।

58. क्लोरो-फॉस्फेट के उत्पादन के ए मेटाक्लो एनीलिन तथा इथेक्सी मेथीलीन ईस्टर (ईएमएमई) की आपसी अनिक्रिया द्वारा 4:7 डाइक्लोरेक्वीनोलीन मैयार किया जाता है, जिसके पश्चात् एल्कलाईन हाइड्रोलिसिस तथा क्लोरीनेशनल जैसी प्रक्रियाएं की जाती हैं। आगे इस मध्यवर्ती को नोवलिडाइअमीन द्वारा संघनित किया जाता है तथा इस प्रक्रिया से प्राप्त क्लोरोक्वीन को फॉस्फोरिक अम्ल द्वारा संसाधित करके क्लोरोक्वीन फॉस्फेट प्राप्त किया जाता है।

59. क्लोरोक्वीन फॉस्फेट को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की सीमाशुल्क उप-शीर्ष सं0 293921 के तहत वर्गीकृत किया गया है।

समान वस्तु

60. चीन द्वारा निर्यातित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा चीन से आयातित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट, भौतिक तथा रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी, कार्य तथा प्रयोग, उत्पाद विशिष्टिकरण, कीमत, वितरण तथा विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के संबंध में तुलनीय है। दोनों का तकनीकी एवं वाणिज्यिक प्रतिस्थापन किया जा सकता है। उपभोक्ताओं ने दोनों को एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया है तथा कर रहे हैं। पाटनरोधी नियमावली के अनुसार याचिकाकर्ता कंपनी द्वारा उत्पादित क्लोरोक्वीन फॉस्फेट, चीन से आयातित वस्तु के समान वस्तु है।

61. याचिकाकर्ताओं तथा चीन के उत्पादकों द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी में कोई ज्ञात अंतर नहीं है, हालांकि प्रत्येक विनिर्माता, उपलब्ध सुविधाओं तथा आवश्यकताओं के अनुसार अपनी उत्पादन प्रक्रिया तय करता है।

62. इसलिए प्राधिकारी अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ यह मानते हैं कि नियम 2 (घ) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है।

घरेलू उद्योग

63. वर्तमान याचिका इपका लैबोरेटरीज़ लि० तथा मंगलम ड्रग्स तथा ऑर्गेनिक्स लि० द्वारा संयुक्त रूप से दायर की गई है। 1996-97 की इंडियन फार्मास्यूटिकल्स इंडस्ट्री सोर्सिंग डायरेक्ट्री के अनुसार, इस उत्पाद के ग्यारह अन्य उत्पादक थे।

64. इन उत्पादकों के अतिरिक्त, याचिकाकर्ता द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, आई डी पी एल, हैदराबाद (भारत सरकार का एक उद्यम) भी संबद्ध वस्तु का विनिर्माण अल्प मात्रा में कर रहा था। आगे, बेयर (इंडिया) लि०, हाईसेल फार्मा लि०, इपका लैबोरेटरीज़ लि०, बंगलम ऑर्गेनिक्स, शेरवानी फार्मास्यूटिकल्स लि०, टाटा फार्मा लि० तथा आई डी पी एल के अतिरिक्त अन्य उत्पादक वास्तव में संबद्ध वस्तु का उत्पादन नहीं कर रहे थे। मै० शेरवानी फार्मास्यूटिकल्स लि०, मै० हाईसेल फार्मास्यूटिकल्स लि०, मै० आई डी पी एल तथा मै० टाटा फार्मा लि० ने अपना उत्पादन बंद कर दिया है। आगे, मै० नेम ऑर्गेनिक्स, अत्यंत अल्प मात्रा में संबद्ध वस्तु का उत्पादन कर रहा है।

65. इपका लैबोरेटरीज़ लि० तथा मंगलम ड्रग्स तथा ऑर्गेनिक्स लि० बहु उत्पाद कंपनियां हैं तथा कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन करती हैं।

66. याचिकाकर्ताओं ने पिछले तीन वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात नहीं किया है। याचिकाकर्ता कई देशों को क्लोरोक्वीन फॉस्फेट का निर्यात कर रहे हैं।

67. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादक कुल घरेलू उत्पादन में 50% से अधिक का हिस्सा रखते हैं तथा किसी भी घरेलू उत्पादक ने याचिका का विरोध नहीं किया है, अतः वे पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) (क) तथा (ख) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने का अधिकार रखते हैं तथा नियम 2(ख) के अनुसार घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

घ. सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत

68. धारा 9 क (1)(ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्यका अर्थ है:-

- i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो: या
- ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु का उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य: या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत:

69. बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहाँ वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।

70. वर्तमान मामले में, गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के रूप में चीन की जांच करनेका प्रस्ताव किया गया है। याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है। यूरोपीय आयोग तथा अमरीका ने पिछले तीन वर्षों के दौरान चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। जहां तक अन्य डब्ल्यू टी ओ सदस्यों द्वारा चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माने जाने का संबंध है, यूरोपीय आयोग ने चीन से फ़ैरो-मालिबडेनम के मामले में चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है। बॉल बेयरिंग के आयातों के संबंध में चल रही पाटनरौधी जांच के मामले में संयुक्त राज्य अमरीका ने चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना है।

71. चीन के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण, दिनांक 4.1.2002 की अधिसूचना द्वारा संशोधित नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 तथा 8 में दिए गए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी नियमों के अनुसार किया जाना है। तदनुसार, याचिकाकर्ताओं ने दावा किया है कि चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण भारत में होने वाली बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक खर्चों तथा लाभ सहित अनुमानित उत्पादन लागत के आधार पर किया जा सकता है।

72. धारा 9 क (1)(ग) के अनुसार, प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी है। चीन के निम्नलिखित उत्पादक/निर्यातकों द्वारा उत्तर प्राप्त हुए हैं:

1. मै0 साइनोकेम जियांगसु इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन, चीन जन.गण.
2. मै0 चौंग क्विंग कांग ली फार्मास्यूटिकल कं0 लि00 चीन जन्न0 गण0

73. निर्यातक की प्रश्नावली के प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण किया गया है। यह कहा गया है कि मै0 साइनोकेम इंपोर्ट तथा एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन एक राज्य स्वामित्व वाली तथा व्यापारिक कंपनी है। मै0 चोंग विंग कांग ली फार्मास्यूटिकल कं0 लि0, संबद्ध उत्पाद के उत्पादक हैं, जिन्होंने निर्यातक प्रश्नावली के लिए उत्तर भी दायर किया है। यह उल्लिखित है कि संबद्ध उत्पाद के उत्पादन के संबंध में लगने वाली निविष्टिगत सामग्री पर कोई प्रोत्साहन अथवा कर अधिमानी व्यवहार नहीं है। तथापि, इसके साथ एक वर्धित मूल्य कर बीजक प्रति सं0 00043105 भी संलग्न है जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि इस पृष्ठ को कर कटौती हेतु प्रतिपूर्ति अथवा प्रमाणन के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। यह कर कटौती को स्वीकृति प्रदान करने के स्थान पर कर प्रतिपूर्ति की व्यवस्था का संकेतक है। यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि प्रश्नावली के अनुबंध-1 में दी गई घरेलू बिक्री से संबंधित सूचना के अनुसार, उत्पादन लागत का परिकलन करते समय ऐसी कटौती को ध्यान में रखा गया है अथवा नहीं। यह देखा गया है कि सौदे, परिवर्ती कीमतों पर किए गए थे। यह भी देखा गया है कि घरेलू बाजार में की गई बिक्री, आयात तथा निर्यात कंपनियों को भी की गई है। घरेलू बाजार में कंपनी की घरेलू बाजार विपणन नीति के बिना, बिक्री कीमतों में इस प्रकार के परिवर्तनों के साथ उपलब्ध कराई जाने वाली सूचना से बिक्री कीमतों में ऐसी व्यापक असंगतियों के कारण स्पष्ट नहीं होते हैं।

74. विनिर्माता कंपनी ने मुख्यतः मै0 साइनोकेम जियांगसू ग्वोटाई ग्रुप हुआटाई इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट के माध्यम से निर्यात बिक्रियां की हैं। उत्तर केवल मै0 साइनोकेम जियांगसू इंपोर्ट तथा एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन द्वारा दायर किया गया है। आगे, उत्पादक कंपनी ने भारत में आगे निर्यातों के लिए अलग-अलग दरों पर बिक्री की है। इस प्रकार की व्यापार नीति का तर्काधार स्पष्ट नहीं है। ग्राहक I तथा II के माध्यम से हुए निर्यातों के संबंध में कीमतों में अन्तर है।

75. जांच अवधि के दौरान, कंपनी ने स्वीकार किया है कि उन्होंने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की अलग-अलग कीमतों पर भारत को बिक्री की है। कंपनी ने परिशिष्ट 8 क, 8ख तथा 8 ग के अंतर्गत यथापेक्षित उत्पादन लागत के स्तर पर व्यय के संबंध में ब्यौरे उपलब्ध नहीं कराए हैं। परिशिष्ट-vii के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार, जहां संबद्ध वस्तु की बिक्री *** आर एम बी प्रति कि.ग्रा.की औसत कीमत पर की गई है वहाँ उत्पादन की औसत लागत *** आर एम बी प्रति कि.ग्रा. तक आती है। ऐसी असंगति के कारण को स्पष्ट नहीं किया गया है। इसके अलावा, अन्य आय से हुई प्राप्तिियों को विचाराधीन उत्पाद में शामिल नहीं रखा गया है। निर्यात कंपनियों द्वारा किए खर्चों को एक साथ जोड़ा नहीं गया है ताकि प्रत्येक चरण पर आने वाली लागत को स्पष्ट रूप से एक

अंतिम लागत शीट द्वारा दर्शाया जा सके । जांच अवधि के लिए तुलन-पत्र में आय तथा व्यय का विवरण उपलब्ध नहीं कराया गया है ।

76. व्यापारिक कंपनी नामतः मै0 साइनोकेम जियांगसू इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का भी विश्लेषण किया गया है । विदेशी भाड़े, विदेशी बीमा आदि के लिए समायोजनों के दावों के संबंध में समर्थनकारी दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराए गए हैं । व्यापारिक कंपनी ने भारतीय ग्राहकों को अलग-अलग कीमतों पर निर्यात किया है। कीमत निर्धारण नीति के आधारको स्पष्ट किया जाना आवश्यक है । व्यापारिक कंपनी ने 2000 को समाप्त वर्ष के लिए भी अपने तुलन-पत्र की एक रूपरेखा उपलब्ध कराई है । यह उल्लेख किया जा चुका है कि कंपनी, निर्यातों के लिए प्राप्त व्यय कर वापसी की हकदार है। यह सूचना उपलब्ध नहीं की गयी है कि कर समायोजन के प्रभाव को लागत में विधिवत समायोजित किया गया है अथवा नहीं । व्यापारिक कंपनी ने बिक्री तथा वितरण सामान्य तथा प्रशासनिक ऊमरी खर्चों के लिए भी समायोजनों का दावा किया है, परंतु इसके समर्थन में पर्याप्त समर्थनकारी दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराए गए हैं । उत्पादनकर्ता कंपनी ने स्पष्ट किया है कि भारत को निर्यात, दो ग्राहक कंपनियों, मै0 साइनोकेम जियांगसू इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉर्पोरेशन तथा मै0 जियांगसू ग्वोटाई इंपोर्ट तथा एक्सपोर्ट द्वारा किया जाता है । मै0 जियांगसू ग्वोटाई ग्रुप हुआटाई इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट ने ऐसे निर्यातों के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है । उपर्युक्त उत्पादक/निर्यातकों ने प्रश्नावली के उत्तर में घरेलू बिक्री, भारत को निर्यात, बिक्री कीमत ढांचा तथा उत्पादन की लागत के संबंध में प्रश्नावली में उत्तर प्रस्तुत किया है । तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार परिशिष्ट 3 क 8 ख 8 ग में यथापेक्षित फैक्टरी लागत तथा भारत को निर्यातों से हुए लाभ, घरेलू बिक्री की लागत तथा लाभ तथा भारत के अलावा अन्य देशों को निर्यातों की लागत तथा लाभ के संबंध में ब्यौरे उपलब्ध नहीं कराए हैं।

77. जैसाकि ज्ञात निर्यातकों तथा चीन के दूतावास को सूचित किया गया है, प्राधिकारी संशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 तथा 8 के अनुसार याचिकाकर्ता के दावे की जांच करने का प्रस्ताव करते हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था के अपने दावे के संबंध में सूचना प्रस्तुत नहीं की है इसलिए मौजूदा हालातों में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में घरेलू बिक्री की जांच करना तथा धारा 8 क 1 (ग) में निहित प्रावधानों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करना संभव नहीं है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 में अन्य बातों के साथ-साथ यह भी प्रावधान है कि:

78. ' गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा परिकलित कीमत अथवा ऐसे किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत के आधार पर किया जाएगा अथवा जहाँ यह संभव न हो, ऐसे किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा जिसमें उचित

लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए आवश्यकतानुसार विधिवत समायोजित समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तविक रूप से संदत्त अथवा संदेय कीमत शामिल होगी....'

आगे उपर्युक्त नियमावली (यथासंशोधित) के अनुबंध-1 के पैरा 8 में यह प्रावधान है:

'नियम 8(1) गैर बाजार अर्थव्यवस्था देश' शब्द का अभिप्राय किसी ऐसे देश से है जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी लागत अथवा कीमत निर्धारण ढांचे के बाजार के सिद्धांतों पर प्रचालन न करने वाला निर्धारित करें ताकि ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्री से पण्य का उचित मूल्य उप पैराग्राफ (3) में विनिर्दिष्ट मानदंड के अनुसार मालूम न हो।

(2) यह अवधारणा होगी कि कोई देश जिसे विनिर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू टी ओ सदस्य देश के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा जांच अवधि से पहले के तीन वर्ष के दौरान किसी पाटनरोधी जांच की प्रक्रिया के लिए एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित किया गया हो अथवा माना गया हो, एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश है।

79. बशर्ते तथापि गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश अथवा ऐसे देश की संबंधित फर्म विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना अथवा साक्ष्य प्रस्तुत करके ऐसी अवधारणा का खंडन कर सकते हैं जो यह सिद्ध करें कि ऐसा देश उप पैराग्राफ 3 में विनिर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

80. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यातक ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 के उप पैरा 3 में किए गए उल्लेख के अनुसार आवश्यक सूचना/साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए हैं, ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मानदण्डों पर विचार कर सकें कि क्या:

- क) कच्ची सामग्रियों समेत कीमतों, लागतों और निविष्टियों, प्रौद्योगिकी एवं श्रम लागत, निविष्टि, बिक्रियां एवं निवेश के बारे में ऐसे देश की संबंधित फर्मों का निर्णय बाजारी संकेतों जो आपूर्ति एवं मांग प्रदर्शित करते हैं, के अनुरूप और इस बारे में पर्याप्त सरकारी हस्तक्षेप के बिना लिया जाता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत से बाजार मूल्य पर्याप्ततः प्रदर्शित होते हैं;
- ख) ऐसी फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति महत्वपूर्ण विकृतियों के अधीन है जो पूर्ण गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली खासकर परिसम्पत्तियों के मूल्य ह्रास, अन्य बट्टे खातों, वस्तु विनियम व्यापार और ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए भुगतान के कारण आई हैं;
- ग) ऐसी फर्में दिवालिएपन और सम्पत्ति संबंधी ऐसे कानूनों के अधीन हैं जो फर्म के प्रचालन हेतु कानूनी निश्चितता और स्थायित्व की गारंटी प्रदान करते हैं; और
- घ) विनिमय दर परिवर्तन बाजार दर पर किया जाता है:

81. किंतु जहां इस पैराग्राफ में विनिर्दिष्ट मानदण्डों के आधारपर लिखित में पर्याप्त साक्ष्यों द्वारा यह प्रदर्शित किया जाता है कि पाटनरोधी जांच के अधीन ऐसी ही एक अथवा अधिक फर्मों के लिए विद्यमान बाजारी स्थितियों के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी इस पैराग्राफ में निर्धारित सिद्धांतों के बजाय पैराग्राफ 1 से 6 तक में निर्धारित सिद्धांतों को लागू कर सकता है ।

82. अतः प्राधिकारी पूर्वोक्त पाटनरोधी नियमों के तहत गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे के संबंध में 31 मई 2001 की पाटनरोधी सीमाशुल्क अधिसूचना संख्या 28/2001 और 4 जनवरी, 2002 की अधिसूचना 1/2002 के आलोक में साक्ष्य सहित गैर बाजार अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर निर्यातक द्वारा कोई खंडन प्रस्तुत न करने और इस तथ्यको ध्यान में रखते हुए कि निर्यातक द्वारा बाजारी शक्तियों के अनुसार संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत उपलब्ध नहीं कराई गई है, प्राधिकारी व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण को लागू नहीं कर सके और दूरवर्ती आधार पर बिक्रियों का निर्धारण नहीं कर सके ।

83. निर्यातक द्वारा दायर अपर्याप्त प्रत्युत्तर को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना पर विचार न करने का निर्णय लिया है और उपरोक्त नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास किया है । अतः चीन से संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य निकालने के लिए उद्गम के देश में अनुमानित उत्पादन लागत जमा बिक्री, प्रशासनिक एवं सामान्य व्यय और उचित समायोजन करने के बाद लाभ की उचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचना को आधार के रूप में लिया गया है ।

84. अतः अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का संदर्भ **** अम0 डा0/मी0 टन के रूप में लिया गया है ।

निर्यात कीमत

85. प्रश्नावली के उत्तर में चीनी विनिर्माताओं/निर्यातकों ने जांच अवधि के दौरान भारत को किए गए निर्यातों का ब्यौरा उपलब्ध कराया है । निर्यातक ने इसके समर्थन में, बीजक की प्रतियों के साथ-साथ, समायोजनों के संबंध में समर्थनकारी दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराए हैं । अंतर्देशीय भाड़े, हैंडलिंग, बीमा, विदेशी भाड़े इत्यादि के संबंध में दावा किए गए समायोजन पर विचार किया गया है और भारत के लिए कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत निकालने की अनुमति दी है । अतः प्राधिकारी ने अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक जांच के

उद्देश्य से क्लोरोक्विन फॉस्फेट की कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत **** अम0 डा0/मी0 टन निर्धारित की है।

चीन के अन्य निर्यातक/उत्पादक:

सामान्य मूल्य

86. प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऊपर उल्लिखित दो निर्यातकों को छोड़कर चीन के किसी भी निर्यातक ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। इस असहयोग के मद्देनजर, प्राधिकारी ने सभी अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार, सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

87. अतः अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक निर्धारण के उद्देश्य से चीन जन.गण. के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का संदर्भ *** अम0 डा0/मी0 टन के रूप में लिया गया है।

निर्यात कीमत

88. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यात कीमत का निर्धारण डी जी सी आई एंड एस कोलकाता से प्राप्त आयात आंकड़ों के आधार पर किया गया है। कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत को निकालने के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतर्देशीय भाड़े तथा पत्तन व्यय पर क्रमशः *** अम0डा0/मी0 टन, *** अम0डा0/मी0 टन, *** अम0डा0/मी0 टन, *** अम0डा0/मी0 टन तथा *** अम0डा0/मी0 टन तक दावा किए गए समायोजनों पर विचार किया गया है।

89. अंतिम निर्धारण होने तक प्रारंभिक निर्धारण के उद्देश्य से कारखानाद्वार पर निर्यात कीमत का संदर्भ *** अम0डा0/मी0 टन के रूप में लिया गया है।

पाटन - सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत की तुलना

90. तुलना से संबंधित नियमों में निम्नानुसार व्यवस्था है:

91. 'पाटन का मार्जिन निकालते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सामान्यतः कारखाना द्वार स्तर पर की जाएगी और यथासंभव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। स्थितियों में अंतर तथा बिक्री, कराधान, व्यापार के स्तर,

मात्राएं, भौतिक विशेषताओं के रूप में अंतरों सहित कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने वाले किन्हीं अंतरों और कोई अन्य अन्तर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करतेहों के लिए प्रत्येक मामले में, उनकी योग्यता के आधार पर, उचित छूट दी जाएगी ।

92. संबद्ध देश के सभी निर्यातक/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन करने के लिए प्राधिकारी ने जांच अवधि में भारित औसत सामान्य मूल्य की तुलना भारित औसत कारखाना-गत निर्यात कीमत से की है ।

निर्यातक/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन निम्नानुसार परिकलित होता है:-

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य(एनवी) डालर/मी.टन	निर्यात कीमत(ईपी) डालर/मी.टन	ईपी के% के रूप में पाटन मार्जिन
(क) मै0 चौंग किंग कांग ले फार्मास्यूटिकल्स कं0 लि0, चीन जन.गण./मै0 सिनोकेम जियांग्सु इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कॉरपोरेशन, चीन जन.गण.	****	****	43.66%
(ख) अन्य सभी निर्यातक/उत्पादक	****	****	52.14%

क्षति एवं कारणात्मक संबंध

94. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव के बारे में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II सिद्धांत (iv) में कहा गया है :-

क) ' घरेलू उद्योग की चिंताओं पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों का मूल्यांकन करना और उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले संकेतकों को मूल्यांकन करना शामिल होगा, इसमें बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्राप्ति या क्षमता का उपयोग में सामान्य या संभावित कमी, कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, सामान, रोजगार, मजदूरी वृद्धि पूंजीगत निवेश को, बढ़ाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं ।'

ख) प्राधिकारी नोट करते हैं कि विभिन्न घरेलू उत्पादकों के लिए क्षति-रहित कीमत का मूल्यांकन संबंधित उत्पादों से बिक्री प्राप्ति पर उचित विचार करके किया गया है । इसके अतिरिक्त, किसी अयोग्यता को समाप्त करने के लिए प्राधिकारी ने कच्ची सामग्रियों, उपयोगिताओं आदि का उपयोग करने संबंधी सर्वोत्तम प्रक्रियाओं को मानकीकृत तथा निर्देशित किया है ।

ग) क्षति के संबंध में, जो कि भारत में उच्च उत्पादन लागत के कारण हो सकती है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत अल्प शुल्क संबंधी नियम लागू होता है।

95. उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के तहत जब क्षति के बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है तो इस प्रकार के निष्कर्ष में, '.....पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं की कीमतों पर उनके प्रभाव तथा इस प्रकार की वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा।'। कीमतों पर पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय प्राधिकारी इस बात पर विचार करते हैं कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन और खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या पाटित आयातों के कारण भारत में समान वस्तुओं की कीमत की तुलना में कीमत में कोई उल्लेखनीय गिरावट आई है अथवा नहीं अथवा क्या इस प्रकार के आयातों से कीमतों में अन्य उल्लेखनीय स्तर तक गिरावट आई है, अथवा कीमत वृद्धि में रुकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

96. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमों के अनुबंध-II(iv) के अनुसार ऐसे अन्य संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे:- उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निबल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

97. घरेलू उत्पादकों के मामले में प्राधिकारी ने निम्नलिखित आर्थिक मानदंडों की जांच की है:

क्षति मानदंड	विवरण	इकाई	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
	वास्तविक बिक्री					
	बिक्रियां	सूचीबद्ध	100.00	125.66	87.32	113.49
	निर्यात बिक्रियां	सूचीबद्ध	100	152.55	204.38	191.97
	आबद्ध उपयोग	सूचीबद्ध	100.00	179.07	134.88	72.09
	कुल बिक्रियां	सूचीबद्ध	100.00	147.37	132.85	124.60
	लाभ					
	उत्पादन लागत	सूचीबद्ध	100.00	92.07	90.12	85.88
	बिक्री कीमत	सूचीबद्ध	100.00	84.58	81.19	68.24
	लाभ/हानि	सूचीबद्ध	100.00	-48.08	-76.92	-244.23
	आयातों में बाजार हिस्सा					

	आयात					
	चीन	मी. टन	61.65	136.53	70.05	91
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	221.46	51.31	129.91
	मांग में					
	व्यावसायिक मांग	सूचीबद्ध	100	136.83	88.72	113.29
	आबद्ध सहित मांग	सूचीबद्ध	100.00	148.84	101.85	101.58
	व्यावसायिक मांग में बाजार हिस्सा					
	घरेलू उद्योग	%	68.07	62.51	67.00	68.19
	अन्य उत्पादक	%	10.78	6.75	8.68	7.07
	संबद्ध देश से आयात	%	18.99	30.73	24.32	24.74
	अन्य देश	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	कुल मांग में बाजार हिस्सा					
	घरेलू उद्योग	%	77.15	75.34	79.43	74.61
	अन्य उत्पादक	%	7.72	4.44	5.41	5.64
	संबद्ध देश से आयात	%	13.59	20.22	15.16	19.75
	उत्पादकता					
	कर्मचारी	सूचीबद्ध	100.00	100.00	100.00	99.60
	प्रति कर्मचारी उत्पादकता	सूचीबद्ध	100.00	145.76	142.12	119.35
	निवेश पर प्राप्ति					
	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	-49.88	-58.32	-217.56
	क्षमता उपयोग					
	क्षमता	मी. टन	516	725	725	725
	क्षमता उपयोग	%	93.41	99.59	94.48	79.03
	उत्पादन	सूचीबद्ध	100	149.79	142.12	118.88
	निर्यात कीमत					
	चीन	रु०/मी. टन	659	563	563	450
	पहुंच मूल्य	रु०/मी. टन			766	590
	चीन				766	590
	नकद हानि	सूचीबद्ध	100.00	3.94	2.29	-102.05
	सामान					
	अंत शेष	सूचीबद्ध	100	115.79	321.05	147.37
	प्रारंभिक स्टॉक	सूचीबद्ध	100	52.78	61.11	169.44
	औसत स्टॉक	सूचीबद्ध	100	74.55	150.91	161.82
	भत्ते					
	कर्मचारियों को भुगतान किया गया भत्ता	सूचीबद्ध	100	118.96	130.67	145.64

98. क्लोरीन फॉस्फेट का उपयोग मलेरिया तथा मलेरिया जैसे लक्षणों के उपचार में होता है जो कि उप महाद्वीप में व्याप्त है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मात्र चीन और भारत क्लोरोक्वीन फॉस्फेट के दो बड़े उत्पादक हैं और चीन में मलेरिया नहीं है। अतः प्राधिकारी

नोट करते हैं कि ऊपर उल्लिखित कारणों से चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के पास अंतर्राष्ट्रीय बाजार को आपूर्ति करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं है।

99. भारत सरकार का राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम क्लोरोक्वीन फॉस्फेट फार्मूलेशन का एक बड़ा ग्राहक है। चूंकि मलेरिया को महामारी माना जाता है अतः पर्याप्त स्टॉक बनाए रखना अनिवार्य है जिसकी आवश्यकता किसी भी समय हो सकती है। इसकी अनियमित आवश्यकता के कारण एक अनियमित मांग पैटर्न भी मिलता है। यह भी देखा गया है कि उत्पादक की मांग में कमी नहीं हुई है जबकि यदि चीनी आयातों के साथ अंतःपोत परिवहन को जोड़ दिया जाए तो आयातों में वृद्धि हुई है।

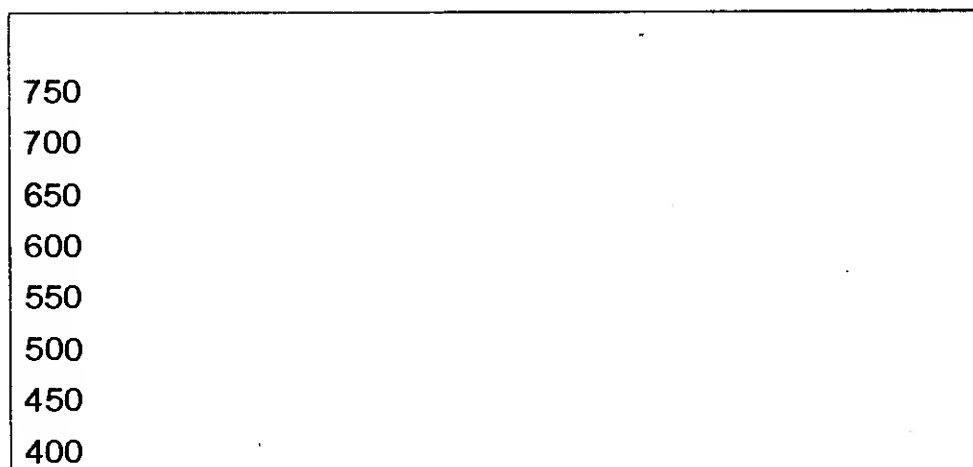
पाटित आयातों की मात्रा तथा बाजार हिस्सा

100. डी जी सी आई एंड एस की आयात सांख्यिकी सूचना के आधार पर जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों में तुलनात्मक तथा सापेक्ष रूप में वृद्धि हुई है। यह भी स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन तथा देश में उत्पाद की मांग में आयातों के हिस्सा की तुलना में आयातों में वृद्धि हुई है। यह भी देखा गया है कि अन्य देशों से आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है और स्विट्जरलैंड से चीनी वस्तुओं के अतः पोत परिवहन के अतिरिक्त और कोई आयात नहीं है, यदि चीनी आयातों के साथ इन आयातों पर भी विचार किया जाए तो यह देखा जाएगा कि आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

101. आयातों में वृद्धि हुई है और संबद्ध देश से पाटित आयातों की वृद्धि दर स्पष्ट है।

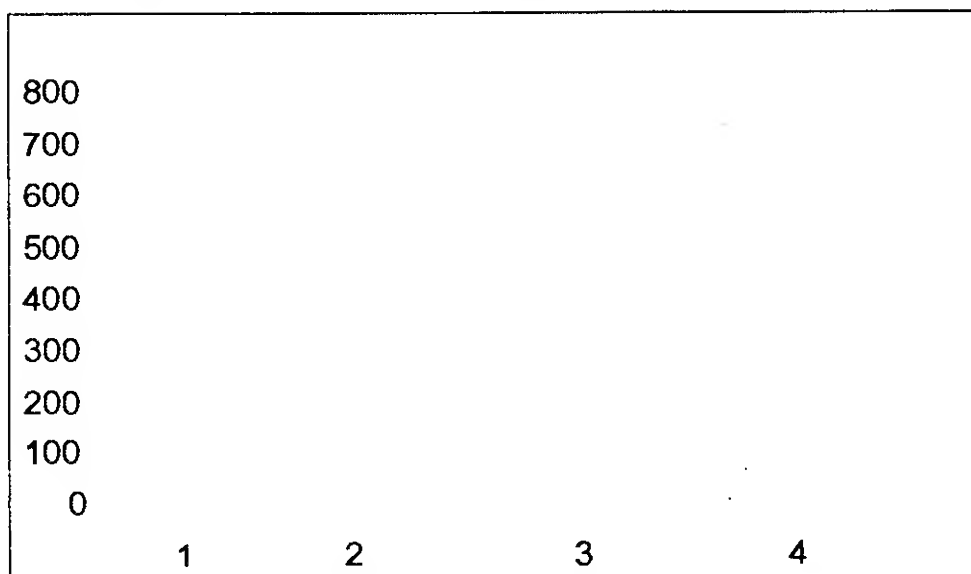
102. घरेलू उद्योग का क्लोरोक्वीन फॉस्फेट उत्पादन वर्ष 2000-2001 में 143.79 से घटकर जांच अवधि 2001-2002 के दौरान 118 हो गया है। सामान्य तौर पर उत्पादन में गिरावट आई है। क्षमता उपयोग में वर्ष 2000-2001 में 106.61 से वर्ष 2001-2002 में 101.15 और अंतिम रूप में जांच अवधि के दौरान 84.61 तक लगातार गिरावट आई है।

कुल उत्पादन को प्रदर्शित करता हुआ ग्राफ



(उत्पादन को भी. टन में जांच-अवधि सहित वर्ष-वार प्रदर्शित किया गया है)

103. घरेलू उद्योग की बिक्री वर्ष 2000-2001 में 125.66 से गिरकर जांच अवधि के दौरान 113.49 हो गई है, जबकि निर्यात बिक्रियाँ वर्ष 2000-2001 में 152.55 से बढ़कर जांच अवा के दौरान 191.97 हो गई हैं, लेकिन आबद्ध उपभोग वर्ष 2000-2001 में 147.37 से अत्यधिक गिर कर जांच अवधि के दौरान 124.60 हो गया है। आबद्ध उपभोग सहित सारी बिक्रियों को समग्रता में लेते हुए यह 2000-2001 में 145.34 से कम होकर जांच अवधि के दौरान 98.23 हो गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यदि आबद्ध उपभोग को घरेलू उद्योग की बिक्रियों के हिस्से के रूप में लिया जाए तो बिक्री मात्रा में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई है। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि क्षमता उपयोग और संबद्ध वस्तु की बिक्री बिक्री मात्रा में गिरावट की प्रवृत्ति के लिए पाटित आयात सहायक हैं और चूँकि बिक्री मात्राओं में गिरावट आ रहा है, अतः घरेलू उद्योग अपना उत्पादन बढ़ाना नहीं चाहता है जिससे सामान का स्टॉक बढ़ेगा।



(पी ओ आई सहित वर्ष-वार आधार पर व्यावसायिक बिक्रियों, आबद्ध उपभोग सहित बिक्रियों और आबद्ध तथा निर्यात बिक्रियों दोनों को शामिल करते हुए बिक्रियों के रूप में बिक्रियों को ग्राफ में अलग-अलग दर्शाया गया है।)

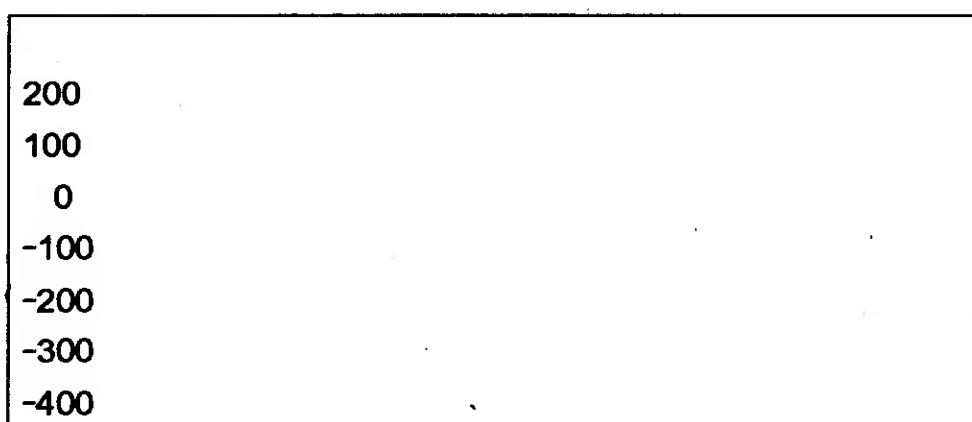
लाभप्रदत्ता

104. उत्पादन की इकाई लागत में 1999-2000 में 100 से जांच अवधि के दौरान 85.88 तक गिरावट आई है जबकि इकाई बिक्री कीमत में 1999-2000 में 100 से जांच अवधि में 68.24 तक अत्यधिक गिरावट आई है। उत्पादन की इकाई लागत में इकाई बिक्री कीमत के अनुपात में गिरावट नहीं आई है, जिससे वित्तीय घाटे में और वृद्धि हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तथ्य के कारण कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण बाजार पर अपनी पकड़ रखने के लिए घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत को उत्पादन लागत से कम करने पर विवश हुआ है, घरेलू उद्योग को घाटा उठाना पड़ रहा है। उद्योग को

घटी हुई बिक्री कीमत के परिणामस्वरूप उत्पादन लागत की वसूली न होने के कारण वास्तविक क्षति हुई है अइर उसे वित्तीय घाटा हो रहा है । अतः, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने के लिए बिक्री कीमत को घटान पर विवश होना पड़ा है ।

105. क्लोरोक्वीन फॉस्फेट की डी पी सी ओ के अंतर्गत रखा गया है और सक्षम प्राधिकारी ने हाल में इस उत्पाद की कीमत को संशोधित कर 790 रु०/कि.ग्रा. किया है । घरेलू उद्योग डी पी सी ओ द्वारा निर्धारित कीमत के स्तर तक पहुंचने में असमर्थ है चूंकि वसूली बहुमत कम है और यह इस कारण है कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियों को चीन से पाटित आयातों समान रखने पर मजबूर हुआ है । जहाँ बिक्री लागतों, उत्पादन मूल्य और बिक्री मूल्य में भी वृद्धि हुई है, बिक्री लागतों में वृद्धि बिक्री मूल्य से अधिक है । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है ।

कुल लाभ/हानि (सूचीबद्ध)



(हानि को वर्ष-वार आधार पर सूचीबद्ध रूप में दर्शाया गया है)

कीमत कटौती

106. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश द्वारा किए जा रहे पाटन का घरेलू उद्योग द्वारा संबद्ध वस्तु के लिए की जा रही निवल बिक्री प्राप्ति पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है । अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने के लिए याचिकाकर्ता को संबद्ध देश से कम कीमत वाले पाटित आयातों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी थी । अतः, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है, चूंकि संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य

घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत से बहुत कम है और इस प्रकार आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में वैधानिक वृद्धि किए जाने में रूकावट पड़ रही थी।

कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत हास/दमन

107. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के इस दावे की भी जांच की है कि प्रत्यक्ष घाटे के कारण घरेलू उद्योग क्षति उठा रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री क्षति के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण सूचक है। अतः प्राधिकारी ने उचित बिक्री कीमत परिलक्षित की है और कम कीमत पर बिक्री की सीमा पर पहुंचने के लिए इस बिक्री कीमत की पहुंच मूल्य से तुलना की है।

108. विश्लेषण में कम कीमत पर बिक्री के महत्वपूर्ण स्तर का पता चलता है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच रही है। आयातों का घरेलू बाजार की कीमत पर महत्वपूर्ण दमनकारी प्रभाव पड़ रहा था, क्योंकि पाटित आयातों के मद्देनजर घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत को बढ़ाने में सक्षम नहीं है। इस प्रकार उपलब्ध साक्ष्य की जांच से पता चलता है कि जांच अवधि में घरेलू उद्योग ने कुल मिलाकर संबद्ध वस्तुओं की बिक्रियों पर वास्तविक क्षति उठाई है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री की सीमा का निर्धारण किया है और प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण भारी कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री का सामना किया है।

माल सूची/संविदा गंवाना

109. प्राधिकारी नोट करते हैं कि औसत माल सूची स्टॉक्स वर्ष 1999-2000 में 100 से बढ़कर जांच अवधि में 161.82 हो गए हैं। प्राधिकारी मानते हैं कि जांच अवधि में बाजार में विस्थापन के साथ स्टॉक्स में बढ़ती हुई प्रवृत्ति संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण है।

110. इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यात कीमत में कमी के कारण घरेलू उद्योग बिक्री कीमत को निर्यात कीमत के समान करने और बिक्री कीमत को प्रतियोगी स्तर पर रखने के लिए बाध्य हुआ है, इस प्रक्रिया में घरेलू उद्योग सीमान्त लागत को वसूल करने में सक्षम नहीं है। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ऐसी कम कीमत पर बेचने में सक्षम नहीं है जिसके परिणामस्वरूप संविदा गंवाना पड़ता है। इस प्रक्रिया में घरेलू उद्योग संबद्ध देश से पाटित आयातों की उपलब्धता के कारण अपने उपभोक्ताओं को खो रहा है। प्राधिकारी मानते हैं कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग उत्पाद को घाटे पर बेचने के लिए बाध्य है।

निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की योग्यता

111. जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए निवेश पर आय की दर घरेलू उद्योग के लिए घाटे के कारण नकारात्मक है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग इस उत्पाद में ताजा पूंजी जुटाने या नए निवेश को नियोजित करने में अक्षम रहा है ।

112. निवेश पर आय घटी है और घरेलू उद्योग तर्कसंगत लाभ अर्जित करने में भी सक्षम नहीं है जिसके परिणामस्वरूप निवेशों पर नकारात्मक आय हो रही है परन्तु प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसका पता नहीं लगाया जा सकता था ।

रोजगार

113. घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर बिना किसी परिवर्तन के कमोबेश स्थिर रहा है परन्तु जांच अवधि के दौरान यह मामूली घटा है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार में यह परिवर्तन घरेलू उद्योग को भारी घाटे और कुशलता और उत्पादकता को अधिकतम बनाने के लिए एक कीमत कटौती संबंधी उपाय के कारण है । तथापि प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार के स्तर में इस गिरावट का पता नहीं लगाया जा सकता जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई ।

114. घाटे की स्थिति में सुधार करने के लिए याचिकाकर्ताओं में से एक के कीमत कटौती संबंधी उपायों के प्रयास के बाद भी घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार नहीं हुआ है । यह भी देखा गया है कि प्रति कर्मचारी उत्पादन में सुधार नहीं हुआ है ।

क्षति का खतरा

115. जहां तक क्षति के खतरे का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों में निम्नानुसार कहा गया है:-

116. * वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों आधार पर किया जाएगा और न की केवल आरोप, कल्पना अथवा परोक्ष संभावना के आधार पर । परिस्थितियों में होने वाले परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली ऐसी किसी स्थिति का स्पष्ट तौर पर अनुमान लगाया जाना चाहिए और ऐसी स्थिति आसन्नवर्ती होनी चाहिए जिसमें पाटन से क्षति पहुंचेगी । वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में आंकलन करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित कारकों पर विचार करेगा:-

(क) भारत में पाटित आयातों की अत्यधिक वृद्धि पर जो पर्याप्त रूप से बढ़े हुए आयातों की संभावना को दर्शाती है।

(ख) निर्यातक के पास मुक्त रूप से निपटान योग्य पर्याप्त क्षमता या उसकी क्षमता में असान्न्वर्ती वृद्धि जो किन्हीं अतिरिक्त निर्यातों को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धताको ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पर्याप्त रूप से बढ़े हुए पाटित निर्यातों की संभावना को प्रदर्शित करती हो।

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर किए जा रहे हैं जिनसे घरेलू कीमतों पर पर्याप्त न्यूनकारी या ह्रासकारी प्रभाव पड़ेगा तथा इससे आगे और आयातों की मांग में वृद्धि की संभावना बनेगी: और

(घ) वस्तुओं के स्टॉक की जांच की जा रही है।

117. प्राधिकारी ने क्षति के खतरे संबंधी पहलुओं की जांच की है और नोट किया है कि आयातों से घरेलू बाजार की कीमतों में भारी कटौती हो रही है जिसका पूर्व के पृष्ठों में विस्तृत विश्लेषण किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों ने अतिरिक्त क्षमता और आयातों के साक्ष्य के संबंध में पर्याप्त साक्ष्य प्रदान नहीं किया है। इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति के खतरे की पुष्टि करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं है जैसाकि याचिकाकर्ता द्वारा दावा किया गया है।

क्षति संबंधी निष्कर्ष:

118. पूर्वोक्त से प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं:

क) संबद्ध देश से आयात समग्र रूप से बढ़े हैं।

ख) आयात घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में महत्वपूर्ण रूप से कटौती की है।

ग) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता बुरी तरह कम हुई है जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय घाटा हुआ।

घ) घरेलू उद्योग कीमत कमी/मंदी के कारण क्षति उठा रहा है क्योंकि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से कम है।

ड.) घरेलू उद्योग को कम कीमत पर बिक्री के कारण क्षति पहुँच रही है क्योंकि संबद्ध वस्तुओं का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग के उचित बिक्री कीमत से कम है।

च) घरेलू उद्योग ने वास्तविक क्षति उठाई है।

छ) क्षति के खतरे का कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं है ।

च. कारणात्मक संबंध :

119. यह निर्धारण करते समय कि क्या घरेलू उद्योग को पाटित आयातों से क्षति पहुंची थी, प्राधिकारी ने निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखा:

120. चीन से पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं के पर्याप्त आयातों से घरेलू उद्योग को अपनी बिक्रीकीमत अलाभकारी स्तर पर रखने के लिए विवश होना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत कटौती की स्थिति पैदा हुई है ।

121. चीन से हुए आयातों से भारतीय बाजार में उत्पाद की कीमतें इस हद तक कम हो गई कि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन की पूरी लागत वसूलने और भारत में संबद्ध वस्तु की बिक्री से यथोचित लाभ प्राप्त करने से वंचित हो गया । भारत में पाटित आयात ऐसी कीमत पर आ रहे थे जिससे समान घरेलू उत्पाद की कीमतें महत्वपूर्ण रूप से कम हुई । इस प्रकार पाटित आयातों की पहुँच कीमत के कारण कीमत में कमी आई।

122. व्यापारिक मांग वर्ष 1999-2000 के दौरान 100 से बढ़कर जाँच अवधि के दौरान 113.29 हो गई है (मांग बल्कि बढ़ी है) । कौटिब सहित मांग भी जाँच अवधि के दौरान बढ़ी है । इसके अतिरिक्त ऐसा कोई अन्य घटक नहीं है जैसे व्यापार प्रतिबंधक प्रथा अथवा प्रौद्योगिकी में विकास जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हो सकती थी । पूर्णरूपेण अथवा भारत में उत्पादन और खपत के अनुपात में भी हुई प्रत्यक्ष वृद्धि से बिक्रियों में बढ़ोतरी हुई जिससे देश में उत्पादन की मांग में घरेलू उद्योग के हिस्से में कमी आई । इसके अतिरिक्त आयातों के पाटित मूल्य से घरेलू उद्योग अपनी इष्टतम लाभकारिता प्राप्त नहीं कर सकी ।

123. इसलिए प्राधिकारी उपर्युक्त से यह नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम रहा है । इसके अतिरिक्त भारत में आयात घरेलू उद्योग के लिए उचित बिक्री कीमत की तुलना में कम कीमत पर रहे हैं । इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग उचित लाभ अर्जित नहीं कर पाया है । इन मानदंडों से सामूहिक और संचयी रूप से यह मालूम होता है कि याचिकाकर्ता को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है ।

छ. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

124. प्राधिकारी का यह मानना है कि सामान्य रूप से पाटनरोधी मुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापार प्रयासों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को पुनः स्थापित किया जा सके जो देश के सामान्य हित में है ।

125. प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं का प्रयोग करके विनिर्मित किए गए उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की सापेक्ष प्रतिस्पर्धा पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है, तथापि भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा इन पाटनरोधी उपायों से कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ नहीं होंगे और घरेलू उद्योग का पतनरूक जाएगा तथा उपयोक्ताओं को संबद्ध वस्तु का अधिक चयन उपलब्ध होने में सहायता मिलेगी।

126. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपायों से चीन जन.गण से किसी भी तरीके से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इस तरह उपयोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपयोक्ता आपूर्ति के दो अथवा अधिक स्रोत फिर भी बनाए रखेंगे।

पहुंच मूल्य:

127. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1962 और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9 क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्कों के लागू स्तर के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित परिकलन योग्य मूल्य होगा।

ज. निष्कर्ष

128. उपर्युक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:-

क) चीनजन.गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सभी किस्मों की संबद्ध वस्तु भारत में इसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर निर्यात की गई है।

ख) घरेलू उद्योग को पाटित संबद्ध वस्तु की कम पहुंच कीमतों द्वारा उत्पन्न मूल्यह्रास के कारण कम निवल बिक्री वसूली की वजह से हुए वित्तीय घाटे द्वारा भी पर्याप्त क्षति हुई है।

ग) संबद्ध देश के मूल से अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन द्वारा घरेलू उद्योग को संचयी रूप से क्षति पहुंची है।

घ) इस प्रकार प्राधिकारी संबद्ध देश के मूल से अथवा वहां से निर्यातित अध्याय 29 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

तदनुसार प्राधिकारी चीन जन.गण. के मूल से/अथवा वहां से निर्यातित क्लोरोक्विन फॉस्फेट के सभी आयातों पर अनन्तिम शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। पाटनरोधी शुल्क निम्न तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और निम्नलिखित देश के मूल से अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 29, सीमाशुल्क उपशीर्ष 293921 के अंतर्गत आने वाले क्लोरोक्विन

फॉस्फेट के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लगाए जाने वाले आयातों/एमटी के पहुँच मूल्य के बीच का अन्तर होगा:-

तालिका

क्र.स	उप शीर्ष	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1.	2.	3.	4	5.	6.	7.	8.	9	10.	11
2	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	मै0 सिनोचेम चीन जन. गण.	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
3	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	कोई निर्यातक	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
4	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	कोई उत्पादक	मै0 सिनोचेम चीन जन. गण.	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
5	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	मै0 सिनोचेम चीन	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	कोई निर्यातक	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
6	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण	चीन जन. गण	कोई उत्पादक	मै0 सिनोचेम चीन जन. गण.	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
7	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	चीन जन. गण	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	मै0 सिनोचेम चीन जन. गण.	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
8	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	चीन जन. गण	मै0 चांगकिंग चीन जन. गण	कोई निर्यातक	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.
9	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन. गण के अलावा कोई देश	चीन जन. गण	कोई उत्पादक	मै0 सिनोचेम चीन जन. गण.	15.831	कि.ग्रा.	अम.डा.

10.	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन.गण	चीन जन.गण के अतिरिक्त अन्य देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	16.38	कि.ग्रा.	अम.डा.
11.	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन.गण	चीन जन.गण	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	16.38	कि.ग्रा.	अम.डा.
12.	293921	क्लोरोक्विन फास्फेट	भारी मात्रा	चीन जन.गण	चीन जन.गण	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	16.38	कि.ग्रा.	अम.डा.

झ. आगे की प्रक्रिया

129. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी :

क. प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा:

ख. निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ताओं तथा अन्य ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्राधिकारी द्वारा अलग से लिखा जा रहा है, जो इस पत्र के जारी होने की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है:

ग. प्राधिकारी आवश्यक समझी गई सीमा तक उस पर सत्यापन करेंगे।

घ. प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों को मौखिक अनुरोध करने का अवसर प्रदान करेंगे, जिसके लिए सभी ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को अलग से तिथि और समय के बारे में सूचना दी जाएगी।

ड. प्राधिकारी अन्तिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पूर्व आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 6th November, 2003

Preliminary Findings

Sub. : Anti-Dumping Investigation concerning imports of Chloroquine Phosphate originating in or exported from China PR.

No. 14/3/2003-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

- i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a petition filed by M/s Ipca Laboratories Ltd., Mumbai and M/s. Mangalam Drugs and Organics Ltd., Mumbai, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Chloroquine Phosphate originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as subject country).
- ii) Preliminary scrutiny of the application filed by the petitioner revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.
- iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner decided to initiate the investigation against imports of subject goods from China PR. The authority notified the Embassy of China PR in New Delhi about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-Rule 5(5) of the Rules.
- iv) The Authority issued a public notice dated 16.7.2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under chapter 29 of Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 originating in or exported from China PR.

v) The Authority forwarded a copy of the public notice to the known exporter (whose details were made available by petitioner) and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rule 6(2):

vi) The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known importers (whose details were made available by petitioner) of subject goods in India and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2).

vii) Request were made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of subject goods made in India during the past three years, including the period of investigation.

viii) The Authority provided a copy of the petition to the known exporter and the Embassy of the subject country in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential petition was also provided to other interested parties, wherever requested.

ix) The Embassy of China PR was informed about the initiation of investigation in accordance with Rules 6 (2) with a request to advise the exporters/producers from their country/territory to respond to the questionnaire within the prescribed time along with the copy of non-confidential version of the petition, copy of the initiation notification and the exporters questionnaire.

x) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4):

1. M/s. Shanghai Zhongxi (Group) Corporation, China PR
2. M/s. Zibo Wanchang Group Co., Ltd., China PR
3. M/s. Zhejiang Nhu Imports & Exports Co., Ltd., China PR
4. M/s. Sinochem Jiangsu Imports & Exports Corpn. China PR
5. M/s. Synchem International Co., Ltd., China PR

xi) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1. M/s. Nem Organics Ltd., Mumbai
2. M/s. Sharvani Pharmaceuticals Ltd., Mumbai
3. M/s. Hicel Pharmaceuticals Ltd., Hyderabad

4. M/s. Advent Pharma Pvt. Ltd., Mumbai
 5. M/s. Bayer (India) Ltd., Mumbai
 6. M/s. Bombay Drugs & Pharma Ltd., Mumbai
 7. M/s. Parag Pharmaceuticals (I) Pvt. Ltd., Mumbai
 8. M/s. Pushpam Pharmaceuticals, Mumbai
 9. M/s. Sandeep Pharma Ltd., Vadodara
 10. M/s. Suneeta Laboratories Ltd., Indore
 11. M/s. Tata Pharma Ltd., Mumbai
 12. M/s. Valient Industeis Limited, Mumbai
 13. M/s. Bayer(India) Ltd., Thane
 14. M/s. E. Merck (India) Ltd., Mumbai
 15. M/s. Indoco Remedies Ltd., Mumbai
 16. M/s. Nicholas Piramal India Ltd., Mumbai
 17. M/s. Pleithico Pharmaceuticals Ltd., Mumbai
 18. M/s. Maneesh Pharmaceuticals Limited, Govandi
 19. M/s. Medo Pharm, Chennai
 20. M/s. S. Kant Healthcare, Mumbai
- xii) Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following exporters/producers
1. M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, China PR
 2. M/s. Chongqing Kangle Pharmaceutical Co., Ltd., China PR
- xiii) Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following Importers/user/Associations:-
1. Nil
- xiv) Information regarding injury was sought from the petitioner(s), which was also furnished by the petitioner. The injury parameters of the following domestic producers were furnished:-
1. M/s Ipca Laboratories Ltd., Mumbai
 2. M/s. Mangalam Drugs & Organics Ltd., Mumbai
- xv) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).
- xvi) Cost investigation was also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the

information furnished by the petitioner. The cost data of the following domestic producers was provided and analysed:--

1. M/s Ipca Laboratories Ltd., Mumbai
2. M/s. Mangalam Drugs & Organics Ltd., Mumbai

xvii) ****In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

xviii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2002 to 31st March 2003 i.e. the period of investigation (POI).

B. VIEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

PETITIONER'S VIEWS

PRODUCT UNDER CONSIDERATION

2. The product under consideration in the present petition is Chloroquine Phosphate. Chloroquine Phosphate is an organic chemical and primarily used as drug for Malaria. It is a white or almost white crystalline powder, hygroscopic, freely soluble in water, slightly soluble in alcohol, ether and methanol. Chloroquine Phosphate is classified under customs sub-heading no. 293921 under the Customs Tariff Act It is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act.

DOMESTIC INDUSTRY

3. The present petition is jointly filed by Ipca Laboratories Ltd., and Mangalam Drugs and Organics Ltd. According to the Indian Pharmaceuticals Industry Sourcing Directory for 1996-97, there were eleven other producers of this product.

4. In addition of these producers, according to the information of the petitioner, IDPL, Hyderabad (a Govt. of India undertaking) was also manufacturing small amount of subject goods. Further, apart from Bayer (I) Ltd., Hicel Pharma Ltd., Ipca Laboratories Ltd., Mangalam Organics, Shervani Pharmaceuticals Ltd., Tata Pharma Ltd., and IDPL, the other producers were infact not producing subject goods. Bayer India Ltd., was producing subject goods for captive consumption only. M/s. Shervani

Pharmaceuticals Ltd., M/s. Hicel Pharmaceuticals Ltd., M/s. IDPL and M/s. Tata Pharma Ltd., have closed their production. Further, M/s. Nem Organics Ltd. is producing very small volumes of subject goods.

5. Ipca Laboratories Ltd., and Mangalam Drugs and Organics Ltd., are a multi product companies and are involved in production of a number of products. The petitioners have not imported the subject goods in the past three years. Petitioners are exporting Chloroquine Phosphate to a number of countries.

LIKE ARTICLE

6. There is no known difference in the technology adopted by the petitioners and by the producers in China, though every manufacturer fine-tunes its production process according to available facilities and necessities.

DUMPING

7. The following information with respect to the normal value of the alleged dumped product in the subject country may be provided:

8. Comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory.

9. Price lists of the exporters, commercial invoices raised in the local market in the subject country, reputed trade journals, etc. may form a reasonable evidence to establish normal value in the exporting country. Please clarify the basis of pricing, such as ex-works/delivered or gross/net prices, etc. Please provide information on the adjustments in the selling prices required to be made on account of trade/commercial discounts, taxes, merchandise differences, taxation, etc. associated with the selling prices considered for determination of normal value.

10. In case there are no sales of the like articles in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, please provide

(i) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country, or

(ii) the cost of production of the subject goods in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs and for profits.

11. Normal value is the price of the goods in the domestic market of the exporting country or territory for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory in the ordinary course of trade. Kind attention of the Designated Authority is requested to Para 7 of Annexure I under the Rules, which has been inserted by notification no. 44/99– Cus (NT) dated 15th July 1999 Para 7 of Annexure I state as under:
12. With regard to submissions and claims made by M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China and Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, petitioner reiterates that the trading company is a State Owned Company. Petitioner referred to a number of EC decisions in this regard. It is submitted that under similar circumstances, EC has refused to grant MET to Chinese Company. EC has denied MET in those situations wherein the company is State Owned. There is a clear admission in the present case that the trading company is State Owned Company. Such being the case, petitioners believe that examination of other parameters may not even be relevant (even though these parameters are equally important and the present company would not perhaps pass the MET test on a number of other parameters also).
13. In fact, going by the principles adopted by the EC, the company cannot be granted even individual treatment, leave aside MET. As you are kindly aware of, an individual treatment (individual dumping margin) can only be granted to an exporter provided that the exporter can demonstrate that it is free to set prices. In case the exporter is not free to set export price, granting separate dumping margin to such an exporter can lead to serious circumvention of anti dumping duty recommended. In the instant case, as is evident from the decision of the EC, the exporter can not be granted even individual treatment.
14. The exporters have not even claimed for market economy treatment. It appears that exporters know very well that they are not operating under market economy conditions. Hence, it is requested that normal value should be determined on the basis of Para 7 of Annexure I. Further it is evident that the manufacturing company is selling goods through state owned trading company only, and the company has no control regarding prices, quantities or the destination of its export sales. Such being the case, petitioner claims that the company is not eligible to get individual treatment (separate dumping margin). Accordingly, petitioner submits that separate dumping margin cannot be assessed for the manufacturing company Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Ltd., as the trading Company, M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation has admitted that they are a state owned company.

15. Out of the two companies, M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is 100% Export Import Company and therefore, there can not have any domestic sales of the company. Kind attention of the Designated Authority is requested to Section 9A 1(c), which states as under:

(a) “normal value”, in relation to an article, means:-

- i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6) ; or
- ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

16. Rule provides that in case, there is no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, then Designated Authority can move to other option of determination of normal value. There is no limitation in the Rule that the sales in the domestic market should be of the same exporter. Sales can be other exporter also. The Supreme Court in the matter of Catalysts has held this view. Such being the situation, the Designated Authority should determined normal value for Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation on the basis of information filed by the other exporter i.e., Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China.

17. “ *In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin.*”

18. It is evident from the above that the Rules clearly provide various methods for determination of normal values in case of non-market economy countries.

19. The Rules were further amended on 31st May, 2001 with regard to determination of normal value in case of non-market economies and Para 7 has been modified and Para 8 has been inserted in Annexure I to the Rules in this regard. The aforesaid amendment merely elaborated the previous

amendment and designated certain countries as non-market economies. The Government of India further amended Para 8 of the Rules on 4th Jan., 2002, which states as under: -

"Para 8 of Annexure 1- Amended on 04.01.2002

(1) The term "non market economy country" means any country which the Designated Authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as a non-market economy country for the purpose of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three-year period preceding the investigation is a non-market economy country.

(3) Provided, however, that a non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the Designated Authority that establishes that such country is not a non market economy country on the basis of criteria specified in sub-paragraph (3)

(4) The Designated Authority shall consider in each case the following criteria as to whether:

a) the decision of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;

c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and

d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;

20. Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market

conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the Designated Authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in this paragraph.

21. In the instant case, China is a non-market economy. European Commission and United States have treated China as non-market economy in the past three years in many cases. European Union and United States are members of World Trade Organization. In India also, the Designated Authority has treated China as non-market economy.
22. The Designated Authority has treated China as non-market economy in practically all the investigations initiated against China after the amendment dated 31st May, 2002. Even after the amendment dated 4th Jan., 02, the Designated Authority have treated China as a non-market economy.
23. With regard to treatment of China as non-market economy by other WTO member's countries, European Commission, in the matter of Ferro molybdenum from China, has treated China as a non-market economy.
24. USA is treating China as a non-market economy in the matter of anti-dumping investigations concerning imports of Ball Bearing.
25. Since, China is a "non-market economy" country, determination of normal value in China is to be done in accordance to the rules relating to non-market economies.
26. According to these Rules, the normal value in China can be determined on any of the following basis:
 1. The price in a market economy third country,
 2. Constructed value in a market economy third country,
 3. The price from such a third country to other countries, including India.
 4. The price actually paid in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
 5. The price actually payable in India, adjusted to include a reasonable profit margin.
27. The normal value in China can, therefore, be determined on any of the above- mentioned basis.

28. The petitioner has determined normal value based on constructed cost of production of the subject goods. The methodology adopted for constructing cost of production has been described below: -

1. Raw material costs: - Petitioner has assessed costs on account of raw materials on the basis of costs incurred by the petitioner company, duly adjusted for a possible difference in the customs duty which is applicable in India.
2. Conversion and S&D costs: - Petitioner has assessed various items of conversion costs on the basis of petitioner company. No selling expenditure beyond ex-factory has been considered. These have been appropriately adjusted for difference in the plant utilisation, considering the plant utilisation of the Petitioner Company.
3. Interest:- Interest cost has been considered @5% of cost of production.
4. Profit:- Profit has been considered @ 5% of cost of production.
29. Export price has been determined on the basis of average export price for the period. According to GATT Agreement on Anti Dumping and Indian Rules, comparison of normal value and export price should be done at the same level of trade, preferably at the ex-factory level.

INJURY

30. Chloroquine Phosphate is used as drug of first choice for treating malaria. China and India are the two major producers of Chloroquine Phosphate in the World. China does not have malaria in their country, and therefore, the exporters/producers from China are dumping subject goods in Indian market.

31. One of the major customers of Chloroquine formulation is National Anti Malaria Programme of the Government of India. The Department procures Chloroquine tablets through competitive bids. Further, the Department normally procures material in bulk, which does not get immediately consumed. In fact, the Department keeps sufficient stocks of the material at any point of time.

32. In view of the above, requirement of the subject goods finds erratic pattern with regard to demand on year-to-year basis. However, it is reiterated that such procurement is not for self-consumption and goes on to add stocks. However, in case consumption of the product is considered after removing abnormality introduced through Govt. procurement, it would be seen that while demand of the product has not declined, the imports are quite significant in the present period (there are low procurement in the last two years by National Anti Malaria Programme of the Government of India resulting in lower imports as also domestic sales).

33. Petitioner has examined import data in detail for the injury period. While reviewing the data for 2000-01, it is found that an import of 98.3 MT has been shown in 2000-01 @ Rs. 182.23 per kg. It was found that while the average import price was more than Rs. 500 per kg. imports of 98.3 MT has been reported @ 182.23 per kg. This very clearly shows that there is an apparent error in the data reported by the DGCI&S.

34. It would appear that there is a decline in the import volumes (and therefore, imports could not have caused injury to the domestic industry). Import volumes from other countries show increase. However, as stated earlier, this is nothing but apparent transshipment of Chinese goods from Switzerland. Therefore, imports from Switzerland should also be included in the imports from China. Once these imports are included, it would be seen that the volume of imports shows an increase. It would also be seen that there is a very substantial fall in the import prices. The landed prices being very low, the domestic industry has been forced to reduce the prices substantially, which is far below the cost of production of the petitioner, thus resulting in significant financial losses to the petitioner.

35. Sales volumes of the domestic industry have declined. The decline in the sales volumes is in spite of reduction in the selling prices by the domestic industry.

36. The landed price of imports after charging prevailing level of customs duties is significantly below the selling price of the domestic industry. Thus, imports are significantly undercutting the prices of the domestic industry. As a result, the domestic industry has been forced to reduced the prices;

- (a) the imports are resulting in price undercutting in spite of reduction in the prices by the domestic industry
- (b) the landed price of imports is significantly below the cost of production of domestic industry causing price suppression
- (c) the selling price of imports is below the non-injurious price of the domestic industry. The imports are thus resulting in price underselling in the market;
- (d) the selling price of the domestic industry is significantly below the DPCO notified prices. The petitioners command a major proportion of Indian market. At the same time, product is covered under DPCO. The export price of the petitioners is far higher than the import price of the material in India. Under the circumstances, the sole reason for the sub-optimal domestic prices is the availability of the imported material at much lower prices,

37. A very vital parameter showing injury to the domestic industry is deteriorated financial performance of the domestic industry. A comparison of unit cost of production and unit selling price would show the domestic industry was making profits in 1999-2000. However, due to dumping by the exporters from China, the profitability of the domestic industry has deteriorated.

38. In spite of reduction in production, the domestic industry is faced with increasing inventory levels; the average stocks of the domestic industry have increased significantly

39. The dumping margin from China is not only more than de-minimus but also very significant. The impact of dumping on the domestic industry is significant.

40. The cash flow of the domestic industry in respect of the subject goods significantly deteriorated in view of significant financial losses. Cash profits from the subject goods have adversely declined.

41. When the demand for the subject goods remained almost the same, sales of the domestic industry have declined. The domestic industry has registered negative growth.

42. The domestic industry anticipates difficulties in raising fresh capital, should the present trend of dumping continue?

43. Productivity of the domestic industry increased in 2000-01 but deteriorated thereafter on the lines of trend in production.

44. Return on investments has significantly declined. The domestic industry has been forced to a situation of losses from a situation of profit, resulting in negative return on investment in the proposed investigation period as compared to a situation of positive return on investments earlier.

45. It would thus be seen that a number of parameters collectively and cumulatively show that the domestic industry has suffered material injury.

Threat of material injury

46. In addition to the material injury already inflicted on the domestic industry, imports from China are posing threat of material injury to the domestic industry.

“A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter-alia, such factors and;”

- (a) A significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- (b) Sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
- (c) Whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,
- (d) Inventories of the article being investigated,

In the instant case,

1. There is an increase in the import volumes. The increase would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by

reducing prices or not effecting legitimate prices (at the cost of financial losses). The efforts of Chinese producers to increase their sales can be seen from further reduction in the selling prices, as would be seen from the price reported for the month of January 2003;

2. The price undercutting is very significant. Further, in spite of steep reduction in the selling prices by the domestic industry, the imports are available at prices lower than the selling prices of the domestic industry, thus continuously resulting in significant price undercutting

3. Capacities created by the producers in China are far more than their domestic demand. In fact, China is understood to be having almost negligible demand for this product due to topical conditions. Production facilities seems to have been set up keeping in view the foreign market;

4. Inventories of the article with the domestic industry have increased

In view of the above, it can be said that the imports from China are causing threat of further material injury to the domestic industry.

EXPORTER'S VIEWS

M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation

47. M/S Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is a state-owned company invested by Sino Chemic General Corporation.

48. It is a trading company, not a producer of the product concerned. The producer of the product concerned is Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., who has also submitted the reply relating to the Exporters questionnaire.

49. The government gives no incentives or tax preferential treatment in relation to the export sales of the product concerned.

50. They are not related to companies involving in the production of the product concerned in China, India and other places.

M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China PR

51. M/S Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., is a joint venture company jointly invested by an American company, Hong Kong Company and several Chinese companies including private shareholders.

52. There are no incentives or tax preferential treatment on inputs materials, sales, nor any subsidies on utilization of energy in relation to the production of the product concerned. They have not imported materials for the purpose of producing the product concerned.

53. Since the product concerned is sold through its unrelated trading company, trading companies involving in this proceeding has provided the information. Domestic sales of the product concerned were for "injection use", and export sales were for tablet use. The production process and cost were not varied, but the quality for "injection" use was high priced than those for "tablet" use.

54. M/s. Zhejiang NHU Import & Export Co., Ltd., claimed that we have neither produced the subject goods as a producer nor sold it through any market channel as a seller.

C. EXAMINATION BY AUTHORITY

55. The foregoing submissions made by the interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and have a bearing upon the case, have been examined, considered and dealt with at appropriate places in these findings.

PRODUCT UNDER CONSIDERATION

56. The product under consideration in the present petition is Chloroquine Phosphate. Chloroquine Phosphate is an organic chemical and primarily used as drug for Malaria. It is a white or almost white crystalline powder, hygroscopic, freely soluble in water, slightly soluble in alcohol, ether and methanol. It is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act.

57. It contains not less than 98.5% and not more than equivalent to 101.0% of $N^4(7\text{-chloroquinolin-4-yl})\text{-}N^1, N^1\text{-diethylpentane-1,4-diaminebis(dihydrogen phosphate)}$, calculated with reference to the anhydrous substance.

58. For production of Chloroquine Phosphate intermediate 4:7 Dichloroquinoline is prepared by the reaction of Meta Chloro Aniline with

Ethoxy Methylene Ester (EMME) followed by Alkaline Hydrolysis and Chlorination. This Intermediate is further condensed with Novaldiamine and Chloroquine obtained is treated with Phosphoric Acid to obtain Chloroquine Phosphate.

59. Chloroquine Phosphate is classified under customs sub-heading no. 293921 under the Customs Tariff Act.

LIKE ARTICLE

60. There is no known difference in Chloroquine Phosphate exported from China and Chloroquine Phosphate produced by the domestic industry. Chloroquine Phosphate produced by the domestic industry and imported from China is comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used and are using the two interchangeably. Chloroquine Phosphate produced by the petitioner company is a like article to the goods imported from China in accordance with the anti dumping rules.

61. There is no known difference in the technology adopted by the petitioners and by the producers in China, though every manufacturer fine-tunes its production process according to available facilities and necessities.

62. The Authority, therefore, for the purpose of preliminary determination pending final determination holds that the goods produced by the Domestic Industry and those exported from the subject country are like article within the meaning of the Rules 2(d).

DOMESTIC INDUSTRY

63. The present petition is jointly filed by Ipca Laboratories Ltd., and Mangalam Drugs and Organics Ltd. According to the Indian Pharmaceuticals Industry Sourcing Directory for 1996-97, there were eleven other producers of this product.

64. In addition of these producers, according to the information of the petitioner, IDPL, Hyderabad (a Govt. of India undertaking) was also

manufacturing small amount of subject goods. Further, apart from Bayer (I) Ltd., Hicel Pharma Ltd., Ipca Laboratories Ltd., Mangalam Organics, Shervani Pharmaceuticals Ltd., Tata Pharma Ltd., and IDPL, the other producers were infact not producing subject goods. Bayer India Ltd., was producing subject goods for captive consumption only. M/s. Shervani Pharmaceuticals Ltd., M/s. Hicel Pharmaceuticals Ltd., M/s. IDPL and M/s. Tata Pharma Ltd., have closed their production. Further, M/s. Nem Organics Ltd., is producing very small volumes of subject goods.

65. Ipca Laboratories Ltd., and Mangalam Drugs and Organics Ltd., are a multi product companies and are involved in production of a number of products.

66. The petitioners have not imported the subject goods in the past three years. Petitioners are exporting Chloroquine Phosphate to a number of countries.

67. The Authority notes that the domestic producers constitute more than 50% of the total domestic production and there is no opposition to the petition by any of the domestic producers, therefore, have the standing to file the petition on behalf of the domestic industry as per Rule 5 (3) (a) and (b) of the Anti-Dumping Rules and also represent Domestic Industry in terms of Rule 2(b)

D. NORMAL VALUE & EXPORT PRICE

68. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

i) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

ii) In case there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

(a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

(b) The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section(6);

69. Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

70. In the instance case, China is proposed to be investigated a non-market economy. Petitioners have claimed that China is a non-market economy. European Commission and United States have treated China as non-market economy in the past three years. With regard to treatment of China as a non-market economy by other WTO member's countries, European Commission, in the matter of Ferro molybdenum from China, has treated China as a non-market economy. USA is treating China as a non-market economy in the matter of anti dumping investigations concerning imports of Ball Bearing.

71. Therefore, determination of normal value in respect of China is to be done in accordance with the Rules relating to non-market economies as contained in Para 7 & 8 of Annexure-1 of Rules as amended vide Notification dated 4.1.2002. Accordingly, petitioners have claimed that normal value in China can be determined on the basis of estimates of cost of production in India including selling, general and administrative expenses and profit.

72. The Authority sent questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A (1)(C). Responses have been received from the following producer/exporters from China:

1. M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, China PR
2. M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China PR

73. The response to the Exporter's Questionnaire has been analysed. It has been stated that M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation is a state owned company and is a trading company. The producer of the product concerned is M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., who has also filed the reply in the exporters questionnaire. It is mentioned that there are no incentives or tax preferential treatment on input material in relation to the production of the product concerned. However, an added value tax invoice copy No. 00043105 has also been enclosed on which it has been mentioned that this page cannot be used for reimbursement or evidence

for tax deduction. This indicates a system of tax reimbursement in place allowing tax deduction. This has not been clarified in the questionnaire whether such deduction has been duly accounted for while calculating the cost of production as provided under Appendix-1 in respect of information relating to domestic sales. It is seen that the transaction had been conducted at varying rates. It is also seen that the sales made in the domestic market are also made to import and export companies. The information provided with such variations in the selling price, without the domestic marketing policy of the company in the domestic market, does not clarify reasons for such wide variations in the selling prices.

74. The manufacturer company has made export sales primarily through M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation and Jiangsu Guotai Group Huatai Import & Export. The response has been filed only by M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation. Further, the producer company has sold at different rates for further exports to India. The rationale behind this trading policy is not clear. In respect of exports through Customers I & II, the prices vary.

75. During the investigation period, the company has admitted to have sold the subject good at varying prices in the domestic market to India. The company has not provided details in respect of the expenditure at the level of production costs as required under Appendix – 8A, 8B & 8C. Further receipts on account of other incomes have not been allocated to the product under consideration. The expenditure incurred by the export companies have not been clubbed so as to show a final cost sheet indicating clearly the elements of cost at each stage. The income and expenditure statement to the balance sheet has not been provided for the period of investigation.

76. The information provided by the trading company i.e., M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export has also been analysed. The supporting documents in respect of adjustments claimed on account of overseas freights, overseas insurance, etc. have not been provided. The trading company has exported to Indian Customers at varying prices, the genesis of the pricing policy need to be explained. The trading company has also provided a sketch of its balance sheet for the year ending 2000. It has been mentioned that the company is entitled to receive tax refund receivable for exports. It has not been provided whether the impact of tax adjustment has been properly adjusted in the cost. The trading company has also claimed adjustments on account of selling and distribution, general and administrative over-heads, sufficient supporting documents for which have not been provided. The producing company explained that the exports to India are made through two customers M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation and M/s. Jiangsu Guotai Group Huatai Import & Export. M/s. Jiangsu Guotai Group

Huatai Import & Export has not furnished any information in respect of such exports. The Authority however notes that the exporter has not furnished the details as per the exporters questionnaire regarding factory cost and profit of exports to India, cost and profit of domestic sales and cost and profits of exports to countries other than India as solicited in Appendixes 8A, 8B & 8C respectively.

77. As communicated to the known exporters and to the Embassy of China, the Authority proposes to examine the claim of the petitioner in the light of Para 7 & 8 of Annexure 1 of anti dumping Rules as amended. The Authority notes that the exporter has not submitted information with regards to its claim of market economy, therefore, the test of domestic sales in the ordinary course of trade is not possible in the given circumstances and to determine the normal value as per provisions contained in Section 9 A 1 (C). The Authority notes that para 7 of Annexure 1 of anti dumping rules, inter-alia provides that:

78. *"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin....."*

Further Para 8 of Annexure 1 of the Rules Supra (as amended) provides that:

"8 (1) The term "non-market economy country" means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph(3)

(2) There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as, a non-market economy country for purposes of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent authority of any WTO member country during the three year period preceding the investigation is a non-market economic country.

79. Provided, however, that the non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the designated authority that establishes that such country is not a non-market economy country on the basis of the criteria specified in sub-paragraph (3).

80. The Authority also notes that the exporter has not furnished necessary information/ evidence as mentioned in sub Para 3 of the Paragraph 8 of Annexure 1 of anti dumping Rules to enable the Designated Authority to consider the following criteria as to whether

- a) the decision of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials cost of technology and labour, output sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values:
- b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts:
- c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and
- d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;

81. Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the Designated Authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in this paragraph.

82. Therefore the Authority in view of no rebuttal by the exporter on the issue of non market economy with evidence in the light of Custom Notification No. 28/2001 dated 31st May 2001 and No. 1/2002 dated 4th January 2002 on the anti dumping in respect of issue of Non Market Economy under anti dumping Rules Supra and the fact that the cost of production of the subject goods as per market forces has not been made available by the exporter thus not permitting the Authority to apply the ordinary course of trade test and to determine the sales being at arm's length.

83. In view of the inadequate response filed by the exporter, the Authority has relied on the facts available as per Rule 6 (8) Supra.

84. The normal value is therefore referenced as US\$****/Kg. for the purpose of preliminary determination pending final Determination.

EXPORT PRICE

85. In response to the questionnaire the Chinese manufactur/exporter has furnished details of export made to India during the period of investigation.

The Authority has considered the export price as per information provided by the exporter M/s. Sinochem and produced by M/s. Chongqing, China PR and the adjustments claimed in regard to inland freight, handling, insurance, overseas freight etc. have been considered and allowed to arrive at ex-factory export price to India. The Authority has thus determined the ex-factory export price as US\$ ****/Kg. of Chloroquine Phosphate for the purpose of preliminary determination pending final determination.

Other Exporters/Producers from China;

Normal Value

86. The Authority notes that none of the exporters from China except above mentioned two exporters responded by way of questionnaire response to the initiation notification. The Authority in view of non-cooperation, has constructed the normal value for all other producers/exporters on the basis of best available information in accordance with Rule 6 (8) of anti dumping Rules.

87. The normal value is therefore referenced as US\$****/Kg. for other exporters/producers of China PR for the purpose of preliminary determination pending final determination.

Export Price

88. The Authority notes that the export price has been determined on the basis of the import statistics from DGCI&S Kolkata. The adjustments claimed on ocean freight, ocean insurance, commission, inland freight and port expenses to an extent of US\$****/Kg. US\$****/Kg. US\$****/Kg. US\$****/Kg. and US\$****/Kg. respectively by the petitioners have been taken into account to arrive at ex-factory export price.

89. The ex-factory export price is referenced as US\$****/Kg for the purpose of preliminary determination pending final determination.

DUMPING- Comparision of Normal Value & Export Price

90. The rules relating to comparison provides as follows:

91. "While arriving at margin of dumping, the Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. The comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level, and in respect of sales made at as nearly possible the same time. Due

allowance shall be made in each case, on its merits, for differences which affect price comparability, including differences in conditions and terms of sale, taxation, levels of trade, quantities, physical characteristics, and any other differences which are demonstrated to affect price comparability.”

92. The authority has carried out weighted average normal value comparison with the weighted average ex-factory export price in Period of Investigation, for evaluation of the dumping margin for all the exporter/producers of the subject country.

The dumping margin for exporter/producers comes as under:

Exporter/ Producer	Normal value(NV) \$/Kg	Export \$/Kg	Price(EP)	Dumping margin as % of EP
(a) M/s. Chong Qing Kang Le Pharmaceutical Co., Ltd., China PR / M/s. Sinochem Jiangsu Import & Export Corporation, China PR	****	****		43.66%
(b) All other exporters/ Producers	****	****		52.14%

E. INJURY AND CAUSAL LINK

93. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry the principle (iv) of Annexure-II of the Anti Dumping Rules states:

a) “The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments.”

b) The Authority notes that the non-injurious price has been evaluated for the various domestic producers by appropriately considering the sales

realisation from the related products. Also in order to eliminate inefficiencies, the Authority has normated and benchmarked the best practices on utilisation of raw materials, utilities etc..

c) As regards the injury, which could happen on account of higher cost of production in India, the Authority notes that under the Indian Anti Dumping Rules it is the lesser duty rule which is applied.

94. Under Rule 11 supra, Annexure-II, when a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "...taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

95. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, we may consider such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II(iv) of the rules supra.

96. The Authority examined the following economic parameters in the case of domestic producers,

Injury parameter	Particulars	Unit	1999-00	2000-01	2001-02	2002-03
	Actual Sales					
	Sales	Indexed	100.00	125.66	87.32	113.49
	Export Sales	Indexed	100	152.55	204.38	191.97
	Captive consumption	Indexed	100.00	179.07	134.88	72.09
	Total sales	Indexed	100.00	147.37	132.85	124.60
	Sales including captive	Indexed	100.00	145.34	104.85	98.23
	Profits					
	Cost of production	Indexed	100.00	92.07	90.12	85.88

	Selling price	Indexed	100.00	89.85	86.24	72.49
	Profit/Loss	Indexed	100	-32.25	-61.08	-623.00
	Market Share in Imports					
	Imports					
	China	MT	61.65	136.53	70.05	91
	Trend	Indexed	100.00	221.46	51.31	129.91
	In Demand					
	Merchant Demand	Indexed	100	136.83	88.72	113.29
	Demand including captive	Indexed	100.00	148.84	101.85	101.58
	Market share in Merchant Demand					
	Domestic industry	%	68.07	62.51	67.00	68.19
	Other producers	%	10.78	6.75	8.68	7.07
	Imports from subject country	%	18.99	30.73	24.32	24.74
	Other countries	%	2.16	0.00	0.00	0.00
	Market share in total demand					
	Domestic industry	%	77.15	75.34	79.43	74.61
	Other producers	%	7.72	4.44	5.41	5.64
	Imports from subject country	%	13.59	20.22	15.16	19.75
	Productivity					
	Employees	Indexed	100.00	113.33	102.44	103.28
	Productivity per employee	Indexed	100.00	145.76	142.12	119.35
	Return on investment					
	Trend	Indexed	100	-49.88	-58.32	-217.56
	Capacity utilization					
	Capacity	MT	516	725	725	725
	Capacity utilization	%	93.41	99.59	94.48	79.03
	Production	Indexed	100	149.79	142.12	118.88
	Export price					
	China	Rs./MT	659	563	563	450
	Landed value	Rs./MT			766	590

	China				766	590
	Inventories					
	Closing stock	Indexed	100	115.79	321.05	147.37
	Opening stock	Indexed	100	52.78	61.11	169.44
	Average stock	Indexed	100	74.55	150.91	161.82
	Wages					
	Wages paid to employees	Indexed	100	108.93	100.92	110.56

97. Chloroquine Phosphate is used for treating malaria and symptoms like malaria, which is rampant in this sub-continent. The Authority notes that only China and India are the two major producers of Chloroquine phosphate and China does not have Malaria as such in their country. The Authority, therefore, notes that due to above mentioned reason the producers/exporters from China have no other option but to cater the international market.

98. National Anti Malaria Programme of the Govt. of India is the major customer of Chloroquine Phosphate formulations. As malaria is treated as an epidemic and required to keep a sufficient stock which may be required at any time. Due to its erratic requirement, an erratic demand pattern is also found. It is also seen that the demand of product has not declined where as imports have gone up if transshipments have added with the Chinese imports.

Volume and market share of dumped imports

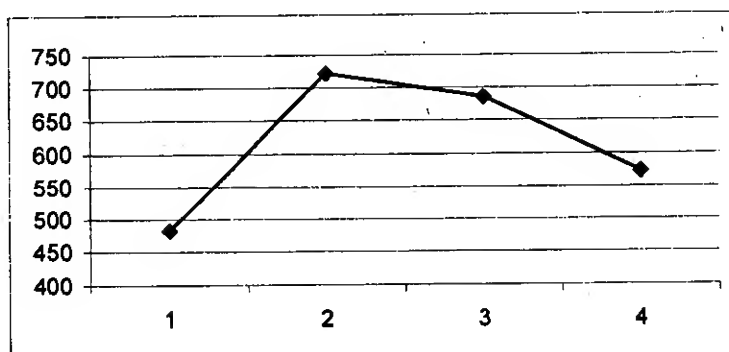
99. Based on the import statistics information of DGCI&S Kolkata, the imports from subject country has increased both in relative and absolute terms during the POI. It is also evident that the imports have increased in relation to production of the domestic industry and share of imports in demand of the product in the country. It is also observed that import volumes from other countries have increased and there is nothing but the transshipment of Chinese goods from Switzerland, if these imports are taken into account along with the Chinese imports, there found to be a increase in volume in imports

100. There has been a increase in imports and the rate of growth of dumped imports from subject country is quite evident.

Production & Capacity Utilisation

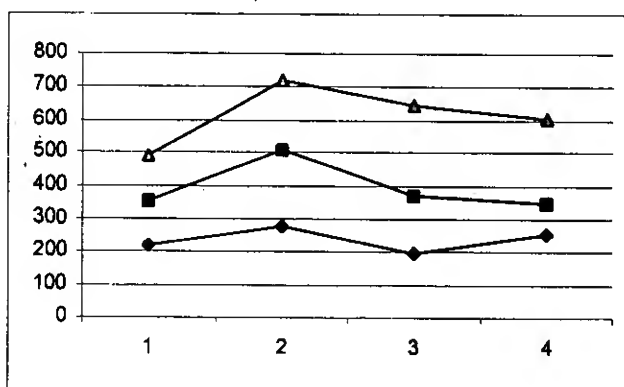
101. The production of Chloroquine Phosphate of the domestic industry has decreased from 149.79 in 2000-2001 to 118 during the POI 2001-2002. In general production has declined. There has been a consistent decline in the capacity utilisation from 106.61 in 2000-2001 to 101.15 in 2001-2002 and finally 84.61 during the POI.

Graph showing Total Production



(Production in MT have been shown on yearly basis including POI)

102. Sales of the domestic industry have declined from 125.66 in 2000-2001 to 113.49 during the POI, whereas the export sales are increased from 152.55 in 2000-2001 to 191.97 during the POI, but the captive consumption has drastically fell from 147.37 in 2000-2001 to 124.60 during the POI. Taking into totality the overall sales including the captive consumption, it has come down from 145.34 in 2000-2001 to 98.23 during the POI. The Authority, notes that the sales volume has significantly declined during the POI if captive consumption is treated as part of sales of the domestic industry. The Authority further notes that the dumped imports are instrumental for a declining trend both in capacity utilisation as well as in the sales volume of the subject goods respectively, and since the sales volumes is declining, the domestic industry does not want increase the production which will lead to the inventory stock..

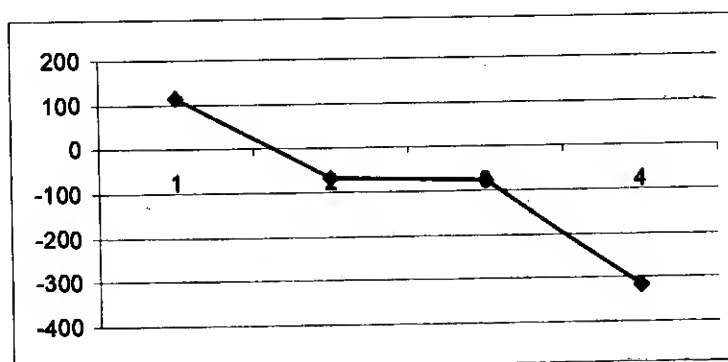


(Sales have been shown in this graph separately, as merchant sales, sales including captive consumption and sales including both captive and export sales respectively on yearly basis including POI).

Profitability

103. The unit cost of production has declined from 100 in 1999-2000 to 89.35 during the POI whereas unit selling price has declined significantly from 100 in 1999-2000 to 72.49 in the POI. The unit cost of production has not declined in proportion to the unit-selling price, which led to the further increase in financial loss. The Authority notes that the domestic industry is incurring the loss due to the fact that the domestic industry is forced to reduce the selling price below its cost of production, to hold on market, due to dumped imports from subject countries. The industry has suffered the material injury on account of depressed selling price resulting in non-recovery of cost of production thereby suffering financial losses. The Authority, therefore, notes that due to dumped imports the domestic industry is forced to reduce the selling price to compete in the market.

104. Chloroquine Phosphate is covered under DPCO and the competent Authority has very recently revised the price of this product to Rs. 790/Kg. The domestic industry is not able to reach to the level of price fixed by the DPCO as the realization is much lower and this is because that the domestic industry is forced to keep its sales at par with the dumped imports from China. While cost of sales, production value and sales value have also increased; the increase in the cost of sales is more than increase in the sales value. This has directly resulted in decline in the profits of the domestic industry.

Total Profit/Loss(Indexed)

(Loss has been shown in the indexed form on yearly basis).

Price undercutting

105. The Authority notes that the dumping by the subject country has a significant impact on the net sales realisation by the domestic industry for the subject goods. To hold on its market share the petitioner had to compete with the low priced dumped imports from the subject country. Thus dumped imports were undercutting the prices of the domestic industry as landed value of imports from the subject country was below the selling price of the domestic industry. The selling price of domestic industry is much below the cost of production of subject goods and imports were thus preventing the domestic industry in effecting legitimate price increase.

Price Underselling and Price suppression/depression

106. The Authority has also examined the claim of domestic industry that the industry is suffering on account of direct losses. The Authority notes that price underselling is an important indicator of assessment of injury, thus the Authority has worked out a fair selling price and compared the same to the landed value to arrive at the extent of price underselling.

107. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry. The imports were having significant suppressing/depressing effect on the price of the domestic market, as the domestic industry is not able to raise its selling price in view of the dumped imports. Thus the examination of the available evidence shows that the domestic industry as a whole suffered injury on its sales of

subject goods during POI. The Authority has determined the extent of price undercutting and price underselling during the POI and holds that domestic industry has suffered significant price undercutting and price underselling during the POI due to dumped imports from the subject country.

Inventory/Loss Contracts

108. The Authority notes that the average inventory stocks have increased from 100 during 1999-2000 to 161.82 during the POI. The Authority holds that the increasing trend in stocks along with the displacement in the market in the POI is due to the dumped imports from the subject country.

109. The Authority, therefore, notes that because of the decline in export price, the domestic industry is forced to match the selling price with the export price and keep the selling price at a level to compete; in this process the domestic industry is not able to recover the marginal cost. It is further noted that the domestic industry is unable to sell at such a low price resulting loss of contract. In this process the domestic industry is losing its consumers due to the availability of dumped imports from subject country. The Authority holds that due to the dumped imports, the domestic industry is forced to sell the product at a loss.

Return on Investment and ability to raise capital

110. The rate of return on investment during POI for the product under consideration is negative due to loss for the domestic industry, as a result of which the domestic industry has not able to raise fresh capital or plan new investment in this product.

111. Return on investment has declined and the domestic industry is also not able to earn the reasonable profit which is resulting negative return on investments but the Authority notes that this could not be ascertained.

Employment

112. The employment level of domestic industry is more or less stable without any change but decreased marginally during the POI. The Authority notes that this change in employment is due to the significant loss to the domestic industry and a cost cutting measure to maximise the efficiency and productivity. The Authority, however, notes that this decline in level of

employment cannot be ascertained that led to injury to the domestic industry.

113. The productivity of the domestic industry has not improved even after one of the petitioners effort of cost cutting measures to improve the loss situation. It is also observed that the production per employee has not improved.

Threat of Injury

114. As regards the threat of injury, the Authority notes that the Anti-Dumping Rules states as follows:

115. "A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances, which would create a situation in which the dumping would cause injury, must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the DA shall consider, inter-alia, such factors and;

- a) a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- b) sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
- c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,
- d) inventories of the article being investigated.

116. The Authority has examined the aspects of threat of injury and noted that the imports are severely undercutting the prices in the domestic market, which have been analyzed in details on pre-pages. Interested parties have not provided sufficient evidence regarding surplus capacity and upsurge of imports. Therefore the Authority notes that there is not sufficient evidence to establish threat of injury as claimed by the petitioner.

Conclusions on Injury:-

117. From the foregoing, the following conclusions are made by the Authority regarding injury suffered by the domestic industry.

- a) Imports from the subject country have increased in absolute terms.
- b) Imports are significantly undercutting the selling price of domestic industry
- c) The profitability of the domestic industry has been severely eroded resulting into financial losses.
- d) The domestic industry is suffering from price suppression/depression, as landed price of the subject goods from the subject country is less than the cost of production of domestic industry.
- e) The domestic industry is suffering from price underselling as landed price of the subject goods are below the fair selling price of the domestic industry.
- f) The domestic industry has suffered material injury.
- g) There is no clear evidence of threat of injury .

F. Causal Link:

118. In determining whether injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority took into account the following facts:

119. Substantial imports of subject goods from China at dumped priced forced the domestic industry to maintain its selling prices to un-remunerative level, which has resulted in a situation of price undercutting in the Indian market.

120. The imports from China suppressed the prices of the product in the Indian market to such an extent that the domestic industry was prevented from recovering its full cost of production and earn a reasonable profit from the sale of subject goods in India. The dumped imports were coming into India at price that significantly undercut the prices of like domestic product. Thus the landed price of dumped imports caused both price depression.

121. Merchant demand has increased from 100 during 1999-2000 to 113.29 during the POI (demand has rather increased). Demand including captive has also increased during the POI. Further, there is no other factor such as trade restrictive practice or development in technology which could have caused material injury to the domestic industry. Increase in imports in absolute terms as also relative to the production and consumption in India have directly resulted increase in the sales, which further resulting in decline in the share of the domestic industry in the demand of the product in the country. Further, the dumped price of imports have prevented the domestic industry from optimizing their profitability.

122. The Authority, therefore, notes from the above that the landed value of imports from the subject country has been at a price below the selling price of the domestic industry. Further, the imports into India have been at a price lower than the fair selling price for the domestic industry. As a consequence thereof the domestic industry has not been able to earn a reasonable return. These parameters collectively and cumulatively indicate that the petitioner has suffered material injury due to the dumped imports.

G. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

123. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

124. The Authority also recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and would help in maintaining availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

125. The Authority notes that the imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from China PR in any way, and, therefore, would

not affect the availability of the products to the consumers. The consumers would still maintain two or more sources of supply.

LANDED VALUE

126. The landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under Customs Tariff Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

H. CONCLUSIONS:

127. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- a) Subject goods in all forms originating in or exported from China, PR have been exported to India below its normal value.
- b) The domestic industry has also suffered material injury.
- c) The injury has been caused to the domestic industry by dumping of the subject goods originating in or exported from the subject country.
- d) The Authority thus considers necessary to recommend anti-dumping duty on imports of subject goods falling under Chapter 29 originating in or exported from the subject country.

Accordingly the Authority recommends the provisional duty be imposed on all imports of Chloroquine Phosphate originating in/or exported from China PR. The anti dumping duty shall be the difference between amount mentioned in Col. 9 of the following table and the landed value of imports/Kg. to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all the imports of Chloroquine Phosphate falling under Chapter 29, Custom Sub-heading 293921 of the Customs tariff originating in or exported from the country mentioned below:-

TABLE

Sl. No	Sub-heading	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)	(11)
2.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	Any country other than China PR	M/s. Chongqing, China PR	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
3.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	Any country other than China PR	M/s. Chongqing, China PR	Any exporter	15.831	Kg.	US\$
4.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	Any country other than China PR	Any producer	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
5.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	China PR	M/s. Chongqing, China PR	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	China PR	M/s. Chongqing, China PR	Any exporter	15.831	Kg.	US\$
6.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	China PR	Any producer	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
7.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	Any country other than China PR	China PR	M/s. Chongqing, China PR	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
8.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	Any country other than China PR	China PR	M/s. Chongqing, China PR	Any exporter	15.831	Kg.	US\$
9.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	Any country other than China PR	China PR	Any producer	M/s. Sinochem, China PR	15.831	Kg.	US\$
10.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	Any country other than China PR	Any producer	Any exporter	16.38	Kg.	US\$
11.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	Any country other than China PR	China PR	Any producer	Any exporter	16.38	Kg.	US\$
12.	293921	Chloroquine Phosphate	bulk	China PR	China PR	Any producer	Any exporter	16.38	Kg.	US\$

I. FURTHER PROCEDURE

128. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:

- a. The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- b. Exporters, Importers, Petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings;
- c. The Authority would conduct verifications to the extent deemed necessary;
- d. The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions, for which the date and time shall be communicated to all known interested parties separately;
- e. The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority